

अंकुर



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

112-113वाँ संयुक्तांक
अक्टूबर 2018 से मार्च 2019

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017





कुर्सियों पर बाएँ से :

श्रीमती सीमा गुप्ता; लेखा अधिकारी, श्रीमती अश्वती वी.एस.; प्रवर उपमहालेखाकार,
श्री फ़ैसल इमाम; महालेखाकार, श्री विनय कुमार गर्ग; सहायक लेखा अधिकारी ।



खड़े हुए बाएँ से :

श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज; क.हि.अ., श्री फूल सिंह; क.हि.अ.,
श्रीमती एकता; व.हि.अ., श्री महेन्द्र सिंह; क.हि.अ. ।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंकुर

(112-113वाँ संयुक्तांक, अक्टूबर 2018 से मार्च 2019)

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	श्री फ़ैसल इमाम महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017
संरक्षक	:	श्रीमती अश्वती वी.एस. वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
मुख्य संपादक	:	श्रीमती सीमा गुप्ता लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री विनय कुमार गर्ग सहायक लेखा अधिकारी
संपादन सहयोग	:	श्रीमती एकता वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री फूल सिंह कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री महेन्द्र सिंह कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	जलियांवाला बाग (अमृतसर) में स्थित शहीदी स्मारक
अंक	:	112 से 113वां संयुक्तांक
प्रतियां	:	तीन सौ प्रतियां
प्रकाशक	:	राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़- 160017
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा।
मुद्रक	:	आज़ाद ऑफ़सेट प्रिंटरस प्रा. लि. प्लॉट नं 144, प्रैस साईट, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, चण्डीगढ़ फोन: 0172-2656144, 2657144 Email : aop144@gmail.com

अनुक्रमणिका

अनुक्रम

❖ प्रकाशक विवरण	2
❖ मुख्य संरक्षक का संदेश	4
❖ संरक्षक का संदेश	5
❖ संपादकीय	6
❖ पाठकों के पत्र	7—8

आलेख

❖ मैं कौन हूँ	सूरजभान	10—11
❖ परवरिश	एकता	12—13
❖ मेरी अविस्मरणीय यात्रा	रंजू महाजन	14—16
❖ सपेरे की खोज	भगत सिंह	17—18

कविता

❖ फिरदौस की ज़न्नत	विनय कुमार गर्ग	24
❖ इन्साफ	सुनील कुमार गुप्ता	25
❖ ग़ज़ल	रिंकू कश्यप	26
❖ भारत मां तुझे सलाम	शिवांश कश्यप	27
❖ कोल्हू	महेन्द्र सिंह	28
❖ मौसम	हरबंस कौर	29
❖ वर्षा ऋतु	एकता	30

कहानी

❖ लड्डू का स्वाद	विनय कुमार गर्ग	32—40
❖ लघु कथा	सुनील कुमार गुप्ता	41
❖ भारती	मुख्त्यार सिंह	42—44

कार्यालयीन समाचार

❖ खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ।	45
❖ नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ एवं सेवा निवृत्तियाँ।	46—50

नोट: 1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं।
रचना की मौलिकता तथा किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं।
2. सभी पाठकों से आगामी अंक हेतु रचनाएं आमंत्रित हैं।

मुख्य संरक्षक का संदेश



मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय पत्रिका 'अंकुर' का 112-113वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ।

'अंकुर' पत्रिका भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और हिंदी-प्रचार के साथ-साथ कार्मिकों की लेखन प्रतिभा की अभिव्यक्ति का भी सशक्त माध्यम है। इस वर्ष नराकास द्वारा 'अंकुर' पत्रिका को क्षेत्रीय कार्यालयों के मध्य हुई प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है। यह उपलब्धि इस बात की द्योतक है कि रचनाकारों और संपादक मंडल का 'अंकुर' पत्रिका के अंकुर को पल्लवित करने का प्रयास सफल रहा है। पत्रिका ने कार्यालय में लेखन-पठन का सार्थक वातावरण तैयार किया है। आशा करता हूँ कि 'अंकुर' हिन्दी पत्रिका आगे भी नए कीर्तिमान स्थापित करती रहेगी।

पुनः मैं 'अंकुर' पत्रिका के सभी पाठकों, रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए कामना करता हूँ।

फैसल

फैसल इमाम

महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़-160017

संरक्षक का संदेश



विभागीय पत्रिका "अंकुर" का नवीन अंक प्रकाशित होने जा रहा है जो कि अत्यंत प्रसन्नता का विषय है।

यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति कार्यालय के समर्पण का प्रतीक है। अंकुर पत्रिका ने राजभाषा के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है साथ ही साथ कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को उभारने का सार्थक मंच भी प्रदान किया है। इस पत्रिका के माध्यम से सभी रचनाकारों और संपादक मंडल को मेरी शुभकामनाएं।

भविष्य में अंकुर पत्रिका नए-नए कीर्तिमान स्थापित करे इस आशा के साथ मैं सभी पाठकों को 'अंकुर' पत्रिका का नवीन अंक सौंपती हूँ।

अश्वती वी.एस.

प्रवर उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय



प्रिय पाठकगण,

कार्यालय की गृह पत्रिका 'अंकुर' का नवीन अंक सुधि पाठकों को समर्पित करना, अपने आप में एक बड़ा ही गौरव व सम्मान का विषय है। पत्रिका का यह नवीन अंक खुद में कई विचारोत्तेजक लेख, कहानी व कविताएँ समाहित किए हुए हैं। हाल ही में 'अंकुर' पत्रिका ने एक और नई उपलब्धि हासिल की है। पत्रिका के गत अंक को, बड़े कार्यालयों की पत्रिकाओं की श्रेणी में, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा, तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

गृह पत्रिकाएं कार्यालय के कार्मिकों हेतु एक ऐसा सरल व सशक्त माध्यम होती हैं जिनके द्वारा वे अपनी लेखन प्रतिभा को निखार सकते हैं और अपने अतिरिक्त समय का सदुपयोग रचनाओं के सृजन में, चाहे वह कविता हो, कहानी हो, लेख हो, संस्मरण हो, इत्यादि में कर सकते हैं। फलस्वरूप रचनाकारों के उद्गार उनकी रचनाओं के स्वरूप में संपूर्ण भारतवर्ष में फैले सुदूर कार्यालयों तक पहुंचते हैं।

लेखन के साथ-साथ उसकी कसौटी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है और पाठकों के पत्र आईने के सामान होते हैं जिनसे रचनाकार को ज्ञात होता है कि वह अपने उद्गार व्यक्त करने में कितना समर्थ रहा है।

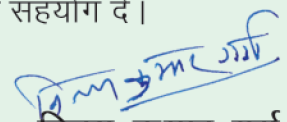
पाठकों की प्रतिक्रियाएं रचनाकारों का उत्साहवर्धन तो करती ही हैं अपितु, प्रतिक्रियाओं से अभिभूत होकर रचनाकार भी श्रेष्ठतर रचनाओं का सृजन करने का प्रयास करता है।

लेखन एक ऐसी विधा है जो नित नए प्रयासों द्वारा उच्च आयामों की तरफ अग्रसर होती जाती है। अतः लेखन के प्रयास करने में झिझक नहीं होनी चाहिए। लेखकों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम भी उनकी रचनाओं की उत्कृष्टता को बढ़ाता है। अतः राजभाषा को अंतःकरण से, अपनाने से उन्नति की अनेक राहें सुदृढ़ होती हैं।

प्रस्तुत अंक भी, इसी कड़ी में एक नया प्रयास है जिसमें कार्यालय के रचनाकारों की भावनाएं, उनकी रचनाओं के रूप में सुधि पाठकों को अर्पित है। मेरा पाठकों से निवेदन है आप अपनी प्रतिक्रियाएं भेज रचनाकारों का मनोबल अवश्य बढ़ाएं एवं 'अंकुर' पत्रिका को और अधिक निखारने में सहयोग दें।

धन्यवाद।

जय हिंदी—जय भारत ।


विनय कुमार गर्ग
संपादक

पाठकों के पत्र


सत्यमेव जयते

संख्या डि/34/लेखा/अंकुर/222194/12-20/14
 No. _____
 भारतीय लेखा सेवा बोर्ड परीक्षा विभाग
 कार्यालय, बरालासोबा (बोझपाड़ा), बिहार
 जिला कार्यालय, पटना (कॉ), पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
 Office of the Assistant General (Audit), Bhr
 Barhalla Sobha, Patna-800 001
 बिहार (Date) 05/05/2019 / 2019

में/को/Date: 05/05/2019 / 2019

से/में,
 साधारण लेखा अधिकारी(हिन्दी)
 कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक)
 पंजाब व यू.टी., बंशीगढ़-160017

39



विषय- विभागीय हिन्दी परीक्षा अंकुर के 110-11 में सम्मिलित प्राप्तिभाव।
 महोदय,

आपके कार्यवाही की विन्दी परीक्षा अंकुर का नवीन ओर प्राप्ति भाग, सहर्ष धन्यवाद (एकिंग अपनी साध. सभा, कलेवर, सामी एव प्रभुति के कारण अवश्य सही व प्रष्टा है। परीक्षा में रचनाओं की विविधता से संपादनीय कोसुति का प्रस्ता प्रस्ता है। हर बिना की सारगर्भित और ज्ञानवर्धक रचनाओं के कारण परीक्षा का स्तर अवश्य विशिष्टता को प्राप्ति कर गया है। इस ओर की उत्कृष्ट रचनाएँ निम्नलिखित हैं: 1. ज्ञान भाग, स्वयं करीर (ओर), महाराष्ट्र गांधी एवं स्वयंभवा (ओर), पूरवी जीवन जीने की कला (ओर), बहुर दिन से गप (कविता), युद्धा सप (कविता), सरसद (कविता), वापसा (कविता)।

राधाधारा हिंदी के विकास में परीक्षा अंकुर का अत्यन्त योग दान है। परीक्षा भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है।

भवदीय

 भारतीय लेखा परीक्षा अधिकारी हिंदी

1794 Phone - 2221226, 2506081, 2223194, 2221941, 2223725, 2506283
 फ़ैक्स: 06-125-250 6223
 ईमेल: nagubhar@icag.gov.in
 ई-कॉपी: EPNB-2223737
 फ़ैक्स: P.B. No. - 47



કાર્યાલય
પ્રધાન મહાલેખાલયક (આ.પ્રવં વા.શે.તે.પ.), ગુજરાત
**Office of the
Principal Accountant General (E&RSA), Gujarat**

સં.જિ.અ/અન્ય પત્રિકા-અધિમત્રણ- 250 /જા. મં. ૨/

તે.શ્રી. મં.,
ચીફ તેક્ષા અધિકારી (રાજ્યકા),
કાર્યાલય મહાલેખાલયક (તે.શ્રી.પ્રવં હન) પંજાબ પર્વ મુ. ટી. પંડીયા,
સેન્ટર ૧૭, પંડીયા - ૧૬૦૦૧૭.

પ્રિથવ - હિન્દી પત્રિકા "અંકુર" : ૧૧૦-૧૧૧ વૉં અંક" કે ઉપર અગ્રિમત્રણ.

મહોદય(મહોદય,

આપકે કાર્યાલય દ્વારા શેઠી મહોં હિન્દી પત્રિકા "અંકુર" : ૧૧૦- ૧૧૧ વૉં અંક" હમારે કાર્યાલય કે શ્રાન્ત હુઝા છે. મુશ્કવત્ અવેશ અંતિમ વૃન્દ મનમોહક હુશરી સે મજા હુઝા છે. !

પત્રિકા મેં સંપ્રિમતિલ રવનમૈં રોચન, નનનવૈંક તથા હટવપર્ણ છે જેસે બીમતી રંડુ મહાન દ્વારા લિખિત આરેશ "સુશી જીવન જીમે કી કલમ" મેં જીવન મેં સદગુણ કે વિકાસ પર બલ દિયા છે, શ્રી વિનય કુમાર મમં દ્વારા લિખિત કવિતા "અપ્રાપ્તે અપ ઘણન મમ્ન...." મેં બદરમ્તે પરિવેશ પર કલ્પાલ કિયા મયા છે, શ્રી જસવિંદર શર્મા દ્વારા લિખિત કવનગી "લખતા" વ શ્રી વિનય કુમાર મમં દ્વારા લિખિત કવનગી "મેસે વ્યતી આશી" (કવનગી) મમંપર્ણ છે. !

હિન્દી શ્રી સાર્વકર્મિકે તિરે પ્રમાસર આપ્તી પત્રિકા "અંકુર" કે ડ્રગ્ગલવ અધિય કે લિખે હમારી શુભકામનાયી.

તિનાક : ૧૧/૦૭/૨૦૧૭

સચીવ મહાલેખાલયક
(મે.પ્ર.વ.) ગુજરાત, પંજાબ

૦૧ જુન ૨૦૧૭

શ્રી મહોં / Shri M.
Principal Accountant General
(A&E) Panjab, Chandigarh

ભલદીય,
Respected Sir,
હિન્દી અધિકારી

તે.શ્રી.પંજાબ, પંજાબ, ગુજરાત - ૩૮૦ ૦૦૯. Andri Bhawan, Narasinghpura, Ahmedabad - 380 009.

પેશ / Phone : 079-26403713, 26561327, 26403874, 26561382, 26560892

પેશ / Fax : 079-26561853 E-mail : agnagujarat1@cap.gov.in



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक्कदारी)-प्रथम उपाय, इलाहाबाद
Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement)-I, U.P., Allahabad

प.सं. वि.अ.पत्रिका/ २३३९५
दिनांक: 14-06-2019

स.सं. 1768

से.सं. 1768

33

27 JUN 2019

सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक्कदारी)
पंजाब एवं न्यूटी. पंटीगढ़ - 160017

विषय:- हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 110-111वें संयुक्तों की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया ।

महोदय,

आपके द्वारा भेजित हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 110-111वें संयुक्तों की एक प्रति प्राप्त हुई, इसके धन्यवाद । पत्रिका के आगमन पृष्ठ पर उपायित उपायित एवं अन्य विवरण कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित उपायित करी अर्पण । संकलित समस्त लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं । विशेषकर सुषी रंजु महाजन (सुषी जीवित जीने की कला), श्री पिंकू पायल (पुला दिन हो गया), श्री मंडी सिंह (सरहदी), श्री जतसिंह शर्मा (साधना) एवं श्री संजय कुमार आर्यन (अज्ञान की हस्तकर की अर्पण कहानी) की रचनाएं कवी रोचक एवं उत्तरेखनीय हैं ।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हार्दिक धन्यवाद । कार्यालय परिवार पत्रिका की अतिर प्राप्ति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है ।

अवधी,

37/6/19

लेखाधिकारी(हिन्दी)

25, बेलौरी चारु, इलाहाबाद - 211001 दूरभाष - 2622629, 2622628, 2622629, 2623353, 2623354 फोन - 2632 - 2424740
25, Barjori Nasti Marg, Allahabad - 211001 Phone - 2622629, 2622628, 2622629, 2623353, 2623354 Fax- 1032 - 2424740

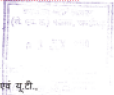
 १५ अगस्त २०१९	भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब फ्लॉट नं. २१, सेक्टर १२, चण्डीगढ़ - १६००१७ Indian Audit & Accounts Department Office of the Accountant General (Audit) Punjab Plot No. 21, Sector 12, Chandigarh-160017 डा.पिन / No. डू.क. स्थिति पत्रिका क्रमांक/2019-20125. दिनांक /Date ३०.०६.२०१९
--	--

सेवा में

महालेखा लेखा अधिकारी (हिन्दी)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदार) पंजाब एवं यू.टी.,

चण्डीगढ़-१६००१७



विषय:	‘अंकुश’ (वित्तमालीय हिन्दी पत्रिका) के ११०-१११ संयुक्तों का वितरण देयण ।
संदर्भ:	हिंदी कक्षा/अंकुश पत्रिका/२०१९-२०/२०१९-१७. दिनांक-२२.०५.२०१९.

महोदय

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की पत्रिका ‘अंकुश’ ११०-१११ संयुक्तों की प्रति प्रान्त हुई । अतः अवगत स्वीकार की । आपके कार्यालय में इस पत्रिका का ई संस्करण भी जारी किया है, इस संबंध में हाटिक शुभकामनाएं ।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी पत्रकारों यादों के लिए प्रभावशाली, रोचक, जानवरुपक, उपकथित एवं मन को तुलना के होते । की यादव जगदीश चण्डीगढ़ मुनिराज जी का लेख ‘महात्म्य मोदी एवं स्वच्छता’, श्री मोहनदास पंडित जी के विचार ‘सरदार’, श्री किशु कुमार गनै जी की कविता ‘अपराध का चसन मानो’ और श्री जलविद्वद्द हर्षा जी की कविता ‘यात्रा’ पत्रिका के विशेष आकर्षक हैं ।

हिंदी की शक्तिता के लिए प्रभावशाली आपकी पत्रिका ‘अंकुश’ के उपजल अधिक के लिए ‘युगंध’ पत्रिका की हाटिक शुभकामनाएं ।

अटवटी,

 हिंदी अधिकारी

E-Mail:- email : agapunjab@agap.gov.in, E-Office: ०१७४ २७४४४४, EPBX:-०१७२-२७५६०००, E-Office:- ०१७२-२७७३२३१, २७५७/Telegram:- Punjabdi

पाठकों के पत्र

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
Indian Audit And Accounts Department
34

सेवा में,
सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी अनुभाग)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदार)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017

महोदय/महोदया,

विषय - (विभागीय हिन्दी पत्रिका) "अंकुर" के 110-111 वें अंक संयुक्तों की प्रतिलिपि।

संदर्भ- अंशिक हिन्दी कक्षा/अंकुर दि. 4/2019-20/127-138 दि. 22.05.2019

हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 110-111 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं प्रामाणिक तथा उपयोगी हैं। पत्रिका के माध्यम से राजस्व के अभाव में विभाग का काम चलाने में सहायता मिलेगी। पत्रिका का संकलन एवं प्रकाशन हेतु आवश्यक तथा सम्बन्धीय पत्रिका के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के अन्तर्गत प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

आदर,

अश्विनी
हिन्दी अधिकारी

ऑडिट रूम : सी. ब्लॉक, टाउन हिल रोड, 1346 ईंग्लिश - 560 001, (Audit Bhavan, 'C' Block, P.B. No. 5398, Bangalore - 560 001).
Ph. : 080-2237335/36 Fax : 080-22388914 E-mail : agaukarnataka1@ag.gov.in Website : http://www.agkar.org.gov.in

महालेखाकार (सा. एवं सा.क्ष.लेप.) का कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर

सं. हि.पत्रिका/पत्रिका पाठकी/14/19-20/46

सेवा में,

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय- महालेखाकार (ले. व हक.),
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017

विषय- हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 110-111 वें (संयुक्तों) अंक की पाठकी के संबंध में।
महोदय,

आपके पत्र सं. हि.पत्रिका/अंकुर दि. 4/2019-20/161-170 दिनांक 22.05.2019 के साथ कार्यालय की पत्रिका "अंकुर" के 110-111 वें अंक की प्रतिलिपि हुई। प्रतिलिपि धन्यवाद।

पत्रिका के कुछ पृष्ठ पर मुद्रित स्वर्ण मंथिर का चित्र अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, जानकारीपूर्ण एवं संश्लेषणीय हैं। विशेषकर श्री वी. प्रकाश जी की "स्वच्छ भारत स्वच्छ शरीर", श्रीमती रंजु महाजन जी की "मुझे जीवन जीने की कला", श्री विनय कुमार गंग जी की "अच्छाई का चलन मानो..." एवं श्री जसवीर शर्मा जी की "साफता" विचार प्रदान, प्रेरक एवं उपयोगी हैं। पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुता तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं।

यह पत्रिका और उपमहालेखाकार (प्रशासन) के अनुमोदनपरान्त जारी किया जाता है।

आदर,

अश्विनी
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

328081 / No. 328081
राज्यपाल कार्यालय/सं. 4/2019-20/127-138 दि. 22.05.2019
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&S), PUNJAB
दिनांक / Date: 14.6.2019

सहा. लेखा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक) पंजाब एवं यू.टी.
चण्डीगढ़-160017

विषय- विभागीय हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 110-111 वें संयुक्तों की प्रतिलिपि के संबंध में।
संदर्भ- हिन्दी व/अंकुर दि. 4/2019-20/179-184 दिनांक 22.05.2019

महोदय,

आपके कार्यालय की विभागीय हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 110-111 वें संयुक्तों की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं प्रामाणिक एवं पत्रिका की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजस्व के अभाव में विभाग का काम चलाने में सहायता मिलेगी। पत्रिका का संकलन एवं प्रकाशन हेतु आवश्यक तथा सम्बन्धीय पत्रिका के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के अन्तर्गत प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

पत्रिका के इस अंक में समाविष्ट किया गया श्री वेद प्रकाश का लेख "स्वच्छ भारत स्वच्छ शरीर", श्री विनय कुमार गंग जी का लेख "अच्छाई का चलन मानो...", श्री जसवीर शर्मा जी का लेख "साफता" विचार प्रदान, प्रेरक एवं उपयोगी हैं। पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुता तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं।

पत्रिका के सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

34
27 JUN 2019
अश्विनी
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

जयपुर, जयपुर-302005, टूरफोन (0141) 2385431-39, फोन (0141) 2385432
Jaipur, Jaipur-302005, Tel. (0141) 2385431-39, Fax : (0141) 2385432
ई मेल / E-Mail : agurajasthan@ag.gov.in

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

सं. हि.पत्रिका/पत्रिका पाठकी/22/2019-20/अ.क्र. 138
दिनांक 03-06-2019

सेवा में,
सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी),
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदार),
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017

विषय- हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 110-111 वें अंक की प्रतिलिपि के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 110-111 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, स्वर्ण धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं जानकारीपूर्ण हैं। विशेषकर श्रीमती रंजु महाजन जी का लेख "मुझे जीवन जीने की कला", श्री विनय कुमार गंग जी का लेख "अच्छाई का चलन मानो..." एवं श्री जसवीर शर्मा जी का लेख "साफता" विचार प्रदान, प्रेरक एवं उपयोगी हैं। पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुता तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं।

पत्रिका की राज-सज्जा उत्तम है। सांख्यिकीय चित्रों में पत्रिका की सुंदरता को और बढ़ावा है। पत्रिका के द्वारा तथा सफल संपादन हेतु सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के प्रसारण अन्तर्गत प्रगति हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

18 JUN 2019
अश्विनी
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

महाराष्ट्र सरकार, टाउन हिल रोड, नागपुर-440001
गुजरात / Maharashtra - 0712-2544038 To 2544110
फैक्स / Fax - 0712-2544130

Audit Bhavan Post Bag No. 228, Civil Lines, Nagpur-440001
वेबसाइट : http://agmaharashtra.gov.in
e-mail : agmaharashtra@ag.gov.in



आलेख

मैं कौन हूँ ? – सूरजभान



आप कौन हैं? कहां से आए हैं और आपको जाना कहां है?

अक्सर जब भी हमसे अपना परिचय पूछा जाता है तो हम अपने शरीर का नाम बताते हैं। लेकिन हम शरीर नहीं हैं, हम तो आत्मा हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि आज मनुष्य स्वयं को भी नहीं जानता और अपने पिता परमात्मा को भी नहीं जानता।

यदि हम लोगों को यह पूछते हैं कि "आप कौन हैं?", तो कोई कहता है मैं व्यापारी हूँ, कोई कहता है मैं वकील हूँ, कोई कहता है मैं व्यापारी हूँ और कोई कहता है मैं इंजिनियर हूँ। परंतु ये सब शरीर में आने के बाद के हमारे व्यवसायिक नाम हैं। जब हम डॉक्टर, वकील, व्यापारी या इंजीनियर का काम नहीं करते थे अर्थात् जब हम छोटे बच्चे थे तब भी हम तो थे ही और जब यह सब काम धन्धा छोड़ देंगे और बूढ़े हो जाएंगे तब भी हम तो होंगे ही। अतः स्पष्ट है कि वे इस प्रश्न का आधार लेकर इन धन्धों के करने वाला 'मैं' स्वयं कौन हूँ? मनुष्य यूँ तो सारा दिन अपने वार्तालाप में कहता है— 'मैं' अमुक कार्य करता हूँ, मैं फलां स्थान पर रहता हूँ आदि। परन्तु यह "मैं" ———"मैं" कहने वाला वास्तव में है कौन?

वास्तव में 'मैं' और 'मेरा' दो अलग-अलग वस्तुएं हैं। 'मैं' है आत्मा और 'मेरा' शरीर तो उसके रहने का स्थान है। आप किसी कमरे में बैठे हैं तो आप यह थोड़े ही कहेंगे कि मैं कमरा हूँ। इसी प्रकार आप शरीर नहीं हैं शरीर तो आपका घर है। जैसा कोई ड्राइवर कार में बैठा होता है और उसे चलाता है, परंतु वह स्वयं तो उससे अलग होता है। इसी प्रकार आत्मा तो ड्राइवर अथवा रथवान है और यह शरीर

उसका रथ है। आत्मा ही कान द्वारा सुनती है, मुख द्वारा बोलती है और आंखों द्वारा देखती है। अतः आप आत्मा हैं, शरीर नहीं। शरीर या कर्मेन्द्रियां तो आपके लिए कर्म करने का साधन हैं। आत्मा ही मानो हीरा है और शरीर उस हीरे का डिब्बा है।

यह तो सर्व-विदित है कि यह शरीर पांच तत्वों का पुतला है। यह शरीर तो एक यन्त्र समूह है जिसके द्वारा मैं बोलता, सुनता, देखता और चलता-फिरता हूँ, परन्तु मैं स्वयं इससे अलग इसका प्रयोग करने वाला हूँ। जैसे टेलिफोन द्वारा बोलने तथा सुनने वाला व्यक्ति टेलिफोन रूपी साधन अथवा यंत्र से अलग एक अनुभवशील, विचारवान चेतन



प्राणी होता है, वैसे ही मैं भी मुख, कान, आंख आदि साधन समूह से अलग एक चेतन हूं। मैं अलग हूं यह शरीर मेरा है। मैं आंख, कान या मुख नहीं हूं बल्कि आंख द्वारा देखने वाला, मुख द्वारा बोलने वाला, कान द्वारा सुनने वाला मैं सबका स्वामी हूं। मैं एक अनादि, अविनाशी आत्मा हूं। शरीर तो एक विनाशी वस्तु है। यह तो हमें कर्म करने और भोजन के लिए मिला है परंतु इस द्वारा कर्म करने और भोजन के लिए मिला है। परन्तु इस द्वारा कर्म करने और भोगने वाला मैं आत्मा अजर और अमर हूं।

आत्मा जब शरीर को छोड़ जाती है तो यह शरीर मुर्दा कहलाता है। तब लोग उसे जलाने की सोचते हैं क्योंकि उसमें जो मूल्यवान वस्तु (आत्मा) थी वह निकल गई तो फिर शरीर किस काम का? तब लोग प्रायः यही कहते हैं कि इसमें से ज्योति चली गई है, प्राण लिकल गए और खेल खत्म हो गया है।

हम आत्माएं आई कहां से हैं और जाना कहां हैं?

हम सभी आत्माएं ब्रह्मलोक से एक धरती पर आई हैं। यहां न स्थूल शरीर होता है और न ही सूक्ष्म, न संकल्प होता है, न वचन और कर्म। इसलिए वहां न सुख होता है न दुख, न जन्म और न मरण। वहां शान्ति ही शान्ति है। इसलिए इसे शान्ति धाम, मुक्ति धाम या निर्वाण धाम भी कहा जाता है। यह ब्रह्म तत्त्व चेतन नहीं है बल्कि प्रकृति का छटा तत्व है जो सत्, रज और तम से न्यारा है।

आत्मा को जब इस सृष्टि के सुखभोग के लिए आना होता है तो वह मुक्ति धाम को छोड़कर इस लोक में प्रवेश करता है और माता के गर्भ में स्थूल देह को अपना बसेरा बनाता है। फिर वह जैसे कर्म करता है तदनुसार ही उसका फल भोगती है। जब सृष्टि रूपी नाटक पूरा होता है तब सभी आत्माएं वापस ब्रह्मलोक अपने घर चली जाएंगी क्योंकि आत्माओं को अपने घर जाने का रास्ता मालूम नहीं है। इसलिए परमपिता परमात्मा नाटक पूरा होने से पहले इस धरा पर अवतरित होते हैं और सभी आत्माओं को पवित्र बनाकर अपने घर वापस ले जाते हैं। परमात्मा का रहने का स्थान भी वही है जो आत्माओं के रहने का स्थान है। आत्मा जन्म-मरण में आती है। परमात्मा जनम-मरण से न्यारे हैं।



काम से जो मनुष्य पीड़ित हैं,
वे जड़ और चेतन में भेद नहीं कर सकता।
- कालिदास

परवरिश – एकता



एक बार मेरे मित्र ने एक रोचक अनुभव मुझसे शेयर किया। उसने दसवीं के स्टुडेंट को अपने पिता पर लेख लिखने को कहा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सभी बच्चों ने लगभग एक जैसी बातें लिख रखी थी। उन्होंने सब अपने मन से लिखा था, एक दूसरे की नकल नहीं की थी। सभी ने अपने पिता को मेहनती और महान बताया था। इनमें से कई बच्चों के पिता शराबी और मारपीट करने वाले थे। फिर भी उन्होंने अपने पिता को महान बताया। मेरे हिसाब से वे अपने पिता पर लेख लिखने की बजाय शायद आदर्श भारतीय पिता पर लेख लिख रहे थे। दरअसल हमारे समाज में कुछ स्टीरियो टाइप बने हुए हैं जैसे कि पिता महान होंगे, मां धर्मपरायण होगी, पति



परमेश्वर होगा। पत्नी सुशील एवं आज्ञाकारी होगी। किसी आदर्श समाज के परिवार में ऐसा नहीं है तो इसे छुपाना क्यों? और उसका वर्णन बढ़ा-चढ़ा कर तो न किया जाए। किसी व्यक्ति की कमियों के बावजूद भी उसे प्यार किया जा सकता है। अभी रिश्तों में दिखावा ज्यादा है। न बेटा पिता के बारे में जानता है, न पिता बेटे के बारे में।

अधितकर मां-बाप अपने बच्चों की परवरिश इस प्रकार करते हैं कि चाह कर भी उनसे अलग-नहीं सोच पाते। इनकी गलत बातें जानते हुए भी वे ताउम्र उनका विरोध नहीं कर पाते जिसे वे 'इज्जत' का नाम देते हैं और यह सिलसला चलता रहता है जिसके कारण बहुत से घरेलू झगड़ों का जन्म होता है। और व्यक्ति का जीवन बहुत ही असहाय हो जाता है। समाज का यह दौहरापन हमें घुन की तरह खा रहा है।

एक अच्छे और स्वस्थ समाज की नींव हम स्वयं घर से ही रख सकते हैं। कहने को यह बहुत-साधारण सी बात लगती है, परंतु इसके पीछे बहुत गहरा भेद है। हर मां-बाप अपने बच्चे को अपने जैसा बनाने में लगे हुए हैं, जिसके लिए वे स्वयं को बच्चों के समक्ष महान और आदर्श होने का उदाहरण देते हैं। माता पिता स्वयं में अच्छे बदलाव लाने की कोशिश करें। माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वे यह न सोचें कि आप जैसे हैं वही सही हैं। माता-पिता आप यह भी नहीं चाहे कि उनके बच्चे आपकी तरह ही बने। यदि आप ऐसा चाहेंगे तो आप अपने बच्चों की आकाश छूती जिज्ञासाओं और आकांक्षाओं को पीछे की ओर धकेल रहे हैं। आपका प्रथम कर्तव्य यह बनता है कि आप उन्हें एक आनंदपूर्ण और प्रेमपूर्ण

माहौल दें। बच्चे एक समय के बाद आप पर निर्भर नहीं रहना चाहेंगे, वे अपने निर्णय स्वयं लेना चाहेंगे। ऐसे में उन्हें रोके नहीं, केवल बच्चों पर मॉनिटरिंग करें।

हर मां-बाप चाहता है कि उसका बच्चा जीवन में उनसे कुछ ज्यादा पाए। परंतु वे चाहते हैं कि उसे अधिक पैसा, अधिक शोहरत मिले। परंतु यह गलत है। माता-पिता चाहें कि वे जितने समझदार हैं, उनके बच्चे उनसे अधिक समझदार हों, वे जितने संतुलित हैं उनके बच्चे उनसे अधिक संतुलित बनें। अपने बच्चों का जीवन उन भौतिक वस्तुओं से सुंदर बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जो आपने जोड़ी है। ये चीजें केवल उपयोग मात्र के लिए होनी चाहिए। इन चीजों को बच्चों के दिमाग पर हावी न करें। उन्हें बढ़ने दे जैसे वे बढ़ना चाहते हैं।



यदि माता-पिता इस प्रकार से बच्चों की परवरिश करेंगे तो निश्चित ही वे जीवन में सही और गलत की पहचान कर सकेंगे और वह एक आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकेंगे।



उस दिन मेरा जीवन सफल होगा, जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिन्दी में वार्तालाप करूँगा।

- शारदाचरण मित्र

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

मेरी अविस्मरणीय यात्रा

— रंजू महाजन



संयोगवश मुझे इस साल के फरवरी महीने में सपरिवार अण्डमान निकोबार द्वीप की राजधानी पोर्ट-ब्लेयर जाने का सुअवसर मिला जो एक भारत के अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्व विख्यात है। हम सब इसलिए खुश थे क्योंकि हम भारत के एक छोर से दूसरे छोर पर जा रहे थे।

हमने टिकटें, होटल एवं अन्य सभी प्रबंध काफी समय पहले से ही कर लिए थे, ताकि हमें यात्रा के वक्त किसी भी परेशानी का सामना ना करना पड़े। इस द्वीप को भारत में सम्मिलित करने के लिए काफी चर्चा एवं विवाद हुआ, इसलिए इन सुंदर द्वीपों को देखने के लिए हमारी उत्सुकता और भी बढ़ गई।

हमने चंडीगढ़ से दिल्ली तक का सफर वोल्वो बस द्वारा तय किया। वहां से इलैक्ट्रिक शटल (Shuttle) के द्वारा एयरपोर्ट पर पहुंचे। दिल्ली का एयरपोर्ट बहुत ही सुंदर है। हम सुबह 5 बजे की एयर इंडिया की उड़ान से चेन्नै पहुंचे। हमारे ट्रेवल एजेंट हमें एयर-पोर्ट पर ही लेने आ गए और पूर्व निर्धारित होटल में ले गए। थोड़ी देर आराम करने के बाद हम शाम को कोर्बिन बीच देखने गए। वहां पर पानी एकदम से सफेद और नीला था और किसी प्रकार की गंदगी भी हमें देखने को नहीं मिली। शाम को बाजार से घूमते हुए हम अपने विश्राम-स्थल पर पहुंच गए।

अगले दिन हम मोटर बोट में बैठकर नार्थन बे आईलैंड पर गए, जिसकी खूबसूरती देखते ही बनती है। इस बीच के दृश्य का चित्र 20 रुपये के नोट पर पिछली तरफ अंकित किया गया है। यह बीच अपने लाइव कोरल एवं वाटर गेम्स के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर हम सबसे पहले मैग्निफाइंग ग्लास में बैठे



और समुद्री जीवों की विभिन्न प्रजातियों का अवलोकन किया। हमने स्नोर्कलिंग की जिसमें हमने पानी में लाइव कोरल और समुद्री जीवों को अपने हाथों से स्पर्श किया और बहुत गहराई से अपनी आंखों से देखा। 'रोज आईलैंड' जो कि अंग्रेजों का मुख्यालय हुआ करता था, आजकल वहां पर वन-विभाग का कार्यालय और अजायबघर स्थित है।

अगले दिन हम वहां की आदिवासी जन-जातियों को देखने के लिए 50 किलोमीटर गहरे वन से होते हुए पुलिस की अगुवाई में हम काफिले के साथ चले। कबिलाई क्षेत्र में जाने से पहले हमने वन विभाग से अनुमति ली। वहां पर हमें 11 आदिवासी दिखाई दिए, जो कि बिल्कुल

अफ्रीकी लोगों की तरह हैं। पूरे समय में हमें गाड़ी के शीशे और मोबाइल बंद करने पड़े ताकि उनकी लाईटों से उनकी आंखें ना चौंधिया जाएं। उसके बाद मोटर में बैठ कर हम मैसोव के जंगलों से भी होते हुए लाइमस्टोन गुफा देखने गए, जिसमें हम शिवजी, विष्णु और गणेश जी की प्रतिमाएं देखी। यह गुफा कुदरत का एक नायाब करिश्मा है। रास्ते में हम स्थानीय बाजार में कच्चे आम खाते हुए घर वापस आ गए।

पोर्ट-ब्लेयर में नारियल और सुपारी की खेती भरपूर मात्रा में होती है। यहां पर रहने वाले लोगों



के लिए सरकार की तरफ से मुफ्त पढ़ाई और चिकित्सा शुल्क वहन किया जाता है। उसी दिन शाम को हम सभी विश्व प्रसिद्ध सेलुलर जेल एवं अजायबघर देखने गए। इसी जेल में काला-पानी की सजा दी जाती थी। इसमें तीन मंजिल वाली 7 शाखाएं बनाई गई हैं जिसमें बहुत सी कोठरियां बनाई गई हैं। इसकी अंधेरी कोठरियों में कैदियों को बंदी बनाया जाता था। इस जेल में क्रांतिकारियों को बंदी बनाकर कई प्रकार की भयानक

यातनाएं दी जाती थी। इस जेल में वीर सावरकर को कई वर्ष बंदी बनाकर रखा गया जो कि अब यह राष्ट्रीय शहीदी स्मारक बन चुका है। यहां प्रत्येक शाम को ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम होता है, जिसमें इस जेल के लगभग मध्य में लगा वट वृक्ष जो इस जेल की आंखों देखी कहानी बयान करता है कि कैसे वीर सेनानियों को कैसे बदबूदार कोठरियों में धकेला जाता था, जहां सांस लेना भी मुश्किल था। पांवों की बेड़ियां खींच कर कई दिन खड़े होने को मजबूर किया जाता था, कोल्हू में जोता जाता और नियत मात्रा में तेल नहीं निकालने पर जानवर से भी बदतर तरीके से मारा जाता था। देश की आजादी के लिए हजारों देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दी। वीरों को अधमरी हालत में नमक लगाकर तड़पने के लिए छोड़ दिया जाता था, बर्फ की सीलियों से बांध दिया जाता, मार-मार के खाल उतार ली जाती थी। ऐसा मंजर मन में आते ही रुह कांप जाती है। यह लिखते हुए भी मेरी आंखें भर आई।

अगले दिन हम समुद्री जहाज के द्वारा हैवलॉक में गए। वहां पहुंचने में लगभग दो घंटे लगे। रास्ते का सफर बहुत आनंददायक रहा। इस जहाज में सभी वर्ग के लोगों ने झूम-झूम कर नृत्य का आनंद लिया। रास्ते में हमें डोल्फिन मछलियां भी दिखाई थी। गंतव्य स्थान पर पहुंचने के बाद हम राधा नगर बीच



पर गए जो कि एशिया का नं. 1 बीच है। यहां का पानी बिल्कुल साफ और सफेद था। सफेद रेत बिल्कुल साफ थी। इसे वैसे ही खूबसूरत बीच नहीं कहा जाता। वहां से अस्त होते सूर्य का दृश्य बड़ा ही मनोहारी था जिसे देखना बड़ा ही आनंददायी रहा। ऐसे लगता था कि जैसे हमारे हाथ में ही आ जाएगा।

उसके बाद विजय नगर बीच में पूर्णमासी का ज्वार-भाटा देखने का अवसर मिला, जहां होटल बुक कराया गया था। इस दिन पानी की लहरों का बहाव बहुत तेज होता है और सुबह जब सोकर उठे तो देखा कि सारा पानी गायब हो चुका था। जैसे वहां पर पानी का कोई नामोनिशान ही ना हो। ऐसा माना जाता है कि वही पानी अगली शाम को वापस आ जाता है, जिसकी शोभा देखते ही बनती है।

अगले दिन हम काला-पत्थर बीच में घूमने के लिए गए, जहां पर ज्यादातर फिल्मों की शूटिंग होती है। हमने भी वहां पर अपनी भी फोटो खींची और स्नान करने के बाद अपने होटल में वापस आ गए और पूरा दिन रोमांचक रहा।



उसके बाद हम भरतपुर बीच देखने गए जो कि हरे पानी के लिए प्रसिद्ध है और बहुत ही खूबसूरत है। यहां पर हमने जैटकी (JETKI) और 'बनाना राइड' (Banana Ride) का आनंद लिया और क्रूज में बैठकर वापस अपने विश्राम स्थल पर आ गए। यह बीच देखना भी बड़ा दिलचस्प रहा।

सबसे दिलचस्प बात यह रही कि वहां किसी के भी मोबाइल फोन काम नहीं कर रहे थे। घर वालों से बात करना जरूरी होता था तो केवल होटल वाले फोन से ही बातें हो पाती थी। इसका फायदा यह हुआ कि हम सब सांसारिक झमेलों से दूर घर की रोजमर्रा की समस्याओं से मुक्त शांति और सूकून महसूस कर

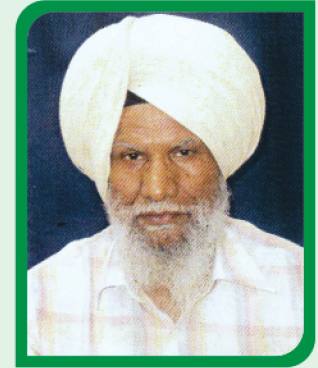


रहे थे। कब वापस आने का समय आ गया, पता ही नहीं चला। अगले दिन फ्लाइट से बेंगलूर होते हुए हम चण्डीगढ़ पहुंचे।

यह यात्रा हमें जीवनपर्यंत याद रहेगी और यह यात्रा सबसे सुंदर रोमांचक एवं अविस्मरणीय यात्रा रहेगी। आज भी जब वो पल याद आते हैं तो एक सुखद अनुभूति का अहसास कराते हैं।



सपेरे की रोज़ – भगत सिंह



मैं पटियाला के लिए निकल और हीरा बाग से थोड़ी दूर ही गया होऊंगा कि एरो सिटी, मोहाली से फोन आ गया कि आपके घर में एक सांप (बाबा जी) घुस गया गया है। फोन मेरे पड़ोस से एक लड़के ने किया। उसने बताया की बाबा जी एक कोने में दुबका बैठा है। मैंने पटियाला से कुछ खरीददारी करनी थी। मैं पटियाला बसस्टैंड को पार ही किया था कि मेरे मन में ख्याल आया कि खरीददारी तो बाद में कर लेंगे पहले बाबा जी को घर से विदा किया जाए।

सुबह 11 बजे का समय था। मैंने ड्राइवर को बोला कि गाड़ी को घर (पटियाला वाला घर) ले चलो और जो भी सामान हमारे पास है उसे रखकर एरो सिटी मोहाली चलते हैं और देखते हैं कि बाबा जी (सांप) कितना बड़ा है और उसे विदा करने का प्रबंध करते हैं। घर जाकर हमने सामान रखा और अपनी



पत्नी को बताया वह भी कहने लगी कि दोपहर को खाना बाद में खा लेंगे पहले बाबा जी (सांप) को घर से विदा करके आते हैं। मैंने पत्नी को भी साथ लिया तथा हम एरो सिटी मोहाली के लिए निकल पड़े।

मोहाली में प्रवेश करने के बाद हमने पड़ोसी से बाबा जी (सांप) के बारे में फिर पूछा तो उन्होंने बताया कि वह वहीं कोने में पड़ा हुआ है तथा हिलने का नाम ही नहीं ले रहा।

मेरी पत्नी ने सुझाव दिया कि क्यों न साथ में किसी सपेरे को ही ले चलें? हमने योजना बनाई कि किसी सपेरे को ढूंढा जाए क्योंकि हम सांप को मारना नहीं चाहते थे और न ही यह चाहते थे कि सांप वहां से भाग कर किसी दूसरे के घरों में घुस जाए। कोठी में सीसे लगवाने का कार्य चला हुआ था। हमने उनसे भी कहा कि किसी सपेरे का पता हो या पता चले तो हमें बता दें या मिलें तो ले आएंगे। हमने भी सपेरे की तलाश शुरू कर दी। सीसे लगाने वाले ने फोन पर सूचना दी की धरमगढ़ में सपेरे रहते हैं, वहां सपेरे मिल जाएंगे। हम धरमगढ़ की ओर चल पड़े। चले ही थे कि देखा कि पेट्रोल समाप्त होने वाला है। मैंने चालक को सैक्टर-43 वाले पेट्रोल पंप की ओर चलने का निर्देश दिया। गाड़ी में पेट्रोल भरवाने के बाद हम फिर धरमगढ़ के लिए चल पड़े तथा फर्नीचर मार्केट के पास एक आटो वाले से पूछा कि हमने सपेरों के पास जाना है जो धरमगढ़ की झुग्गी-झोंपड़ियों में रहते हैं। आटो वाले ने कहा, साहब मैं उसी तरफ जा रहा हूं, कृपया मेरे पीछे-पीछे चलो मैं आपको वहां ले चलता हूं। आटो वाला हमें जगतपुरा की ओर ले गया तथा कुछ देर बाद आंखों से औझल हो गया। मेरी घरवाली ने कहा कि आप भटको मत आप उस कट रास्ते को ढूंढो जो रेलवे लाईन को पार कराता है। फिर हमने वो रास्ता ढूंढ लिया और रेलवे लाईन

पार धरमगढ़ की ओर चल पड़े और देखने लगे कि कोई व्यक्ति दिखाई दे तो एक बार पूछलें कि सपेरे किस तरफ रहते हैं परन्तु कोई दिखाई ही नहीं दे रहा। एक आटो वाले को हाथ दिया तो वह नहीं रुका फिर आगे रोककर फिर चल पड़ा। फिर आगे एक व्यक्ति दिखाई दिया जो रोड के किनारे पड़ा हुआ था तथा एक व्यक्ति उसके पास खड़ा फोन पर बातों में मशगुल था। उनसे पूछना हमने मुनासिब नहीं



समझा। थोड़ा आगे जाने पर एक छोटी सी फैक्टरी में एक सरदार दिखाई दिया मेरे ड्राइवर ने उस आवाज देकर बुलाया और उससे सपेरा बस्ती का पता पूछा। वह वहां कुछ रोज पहले ही आया था उसने कहा कि उस इस तरह की कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने सुझाव दिया कि हम थोड़ा आग जाकर पूछ लें। हमारी गाड़ी थोड़ी और आगे चली कि हमने देखा दो व्यक्ति फैक्टरी का गेट बंद कर रहे थे तो हमने उनसे पूछा तो उन्होंने बताया कि रेलवे लाईन की तरफ ही सपेरों की झोपड़ियां हैं। मैं और मेरी पत्नी खुश हुए कि कुछ तो मेहनत पल्ले पड़ी।

हम सपेरों की बस्ती में चले गए। वहां हमने एक औरत से बात की और आने का कारण बताया। वह सपेरे की बीवी थी। वह सपेरे से बात करने अंदर गई और जल्दी ही बाहर आ गई। उसने बताया कि उसका पति घर पर नहीं है। आप किसी दूसरे सपेरे से बाद कर लो। फिर हमने दूसरे सपेरे से बात की और सारा मामला बताया। उन्होंने इस काम के लिए 2100 रुपये मांगे। बातचीत करने पर वो इस काम के लिए 1100 रुपये में मान गया। उसने अपनी मोटरसाईकिल हमारी कार के पीछे लगा ली। इस तरह हम हमारे एरो सिटी वाले घर पर पहुंचे जहां बाबा जी (सांप) दुबके बैठे हुए थे तथा जिसके कारण वहां चल रहा काम भी रुका हुआ था।

सपेरे ने एक बड़े कपड़े की मांग की क्योंकि सांप बड़ा था जो कि लगभग 5 फुट लंबा था। हमने गाड़ी में कपड़ा ढूंढा क्योंकि घर के अंदर तो जा ही नहीं सकते थे क्योंकि बाबा जी बैठे हुए थे। हमारी असमर्थता को देखते हुए उसने अपना परना ही लिया और बाबा जी को पकड़ लिया तथा 1100 रुपये लेकर बाबाजी को अपने साथ ले गया। बाबा जी (सांप) को विदा कर हम सब बड़े खुश हुए। उसके बाद घर में चल रहा काम भी आरंभ हो गया तथा हम भी गाड़ी में बैठकर दोपहर के खाने के लिए होटल की तरफ चल दिए। मैं सोच रहा था कि आज का क्या प्लान बनाया था और क्या करना पड़ा तथा साथ में ऐसा महसूस हो रहा था कि एक बहुत बड़ी समस्या का बोझ उतर गया। मन को बहुत सकून मिल रहा था।



कार्यालयीन गतिविधियां



‘अंकुर’ पत्रिका के 110-11वें अंक का विमोचन करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।



‘अंकुर’ पत्रिका के 110-11वें अंक का विमोचन करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।

कार्यालयीन गतिविधियां



संपादक मंडल



‘अंकुर’ पत्रिका के नवीन अंक को देखकर प्रफुल्लित होते कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यगण।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



गणतंत्र दिवस के दौरान झण्डा फहराते समय राष्ट्रगान की मुद्रा में कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण।



गणतंत्र दिवस के दौरान सामूहिक गान प्रस्तुत करते हुए कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण।

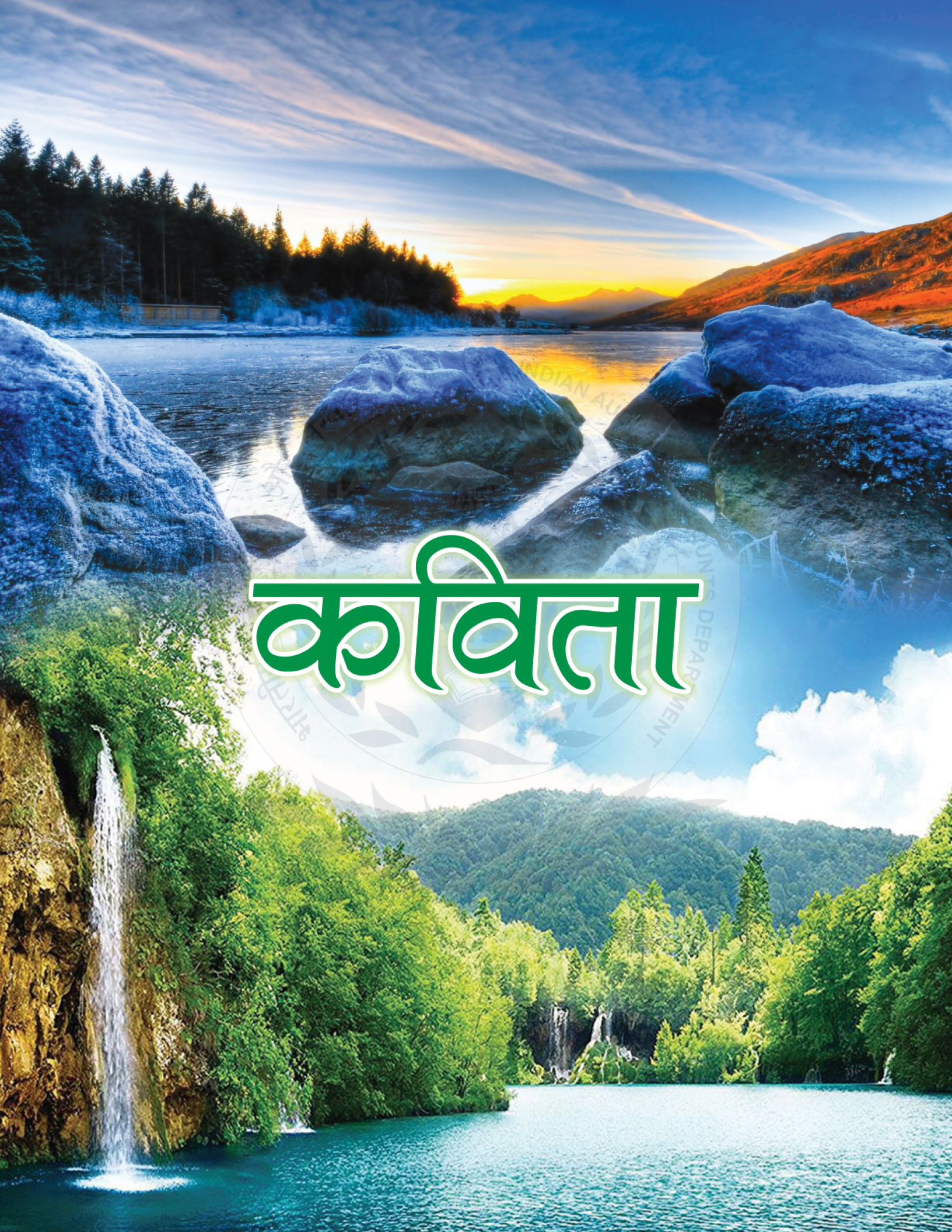
कार्यालयीन गतिविधियाँ



गणतंत्र दिवस के दौरान बाल कलाकार को पुरस्कृत करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।



गणतंत्र दिवस के पावन पर्व पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ताओं को पुरस्कृत करते श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।



कविता

फिरदौस की जन्नत – विनय कुमार गर्ग



बीते सत्तर बरसों से यारों
जन्नत का कितना नुक्सान हुआ
इस 35A और 370 की दफा से
क्या माँ भारती का सम्मान हुआ

अब काम हुआ भारत में ऐसा
हतप्रभ पूरा विश्व हुआ
उठे मरोड़, लग गई पेचिश
पाक का सुख-चैन हराम हुआ

था बना हुआ वो मर्ज जीर्ण
मुकम्मल अब इलाज हुआ
था मस्तक का नासूर जो
जड़-मूल से अब विनाश हुआ

अशांति की चिड़िया फुर्र हुई
अलगाववादियों का बंटधार हुआ
लगी लगाम अब बलवाइयों पर
घाटी का आज न्याय हुआ

रोता था कश्मीर को पाक
अब पीओके के लाले हैं
हैं परेशां अब उन्हीं साँपों से
जो आस्तीनों में पाले हैं

दबा-कुचला लद्दाख भी मानो
दफा 370 के अंधकार से आजाद हुआ
गलत सीटों के बंटवारे का
रास्ता भी नवीन ईजाद हुआ

क्रान्ति हुई पहले भी कितनी
रक्तपात बेहिसाब हुआ
इस रक्तहीन क्रान्ति से देखो
जन्नत का कल्याण हुआ

घाटी में दफा 370 का यारों
दुरुपयोग भी बेहिसाब हुआ
दर्जा विशेष की स्याह पट्टी से
कश्मीरी कितना गुमराह हुआ



महिलाएं बेवा कितनी हुई
बचपन भी नित अनाथ हुआ
दफा 370 के अवसान से
अब जाकर मूल निदान हुआ

कुछ मतलबपरस्तों की करनी से
जन्नत का हाल बदहाल हुआ
बरगलाया यौवन रोटी की खातिर
बंदूकों से जन-जीवन बर्बाद हुआ

उगला जहर, बारूद उड़ाया
देशद्रोह जैसा भी कुछ काम हुआ
चंद स्वार्थी कपूतों के कारण ही
भारत माता का अपमान हुआ

न बख्शा जालिमों ने सैनिक भी
आन पर उसके प्रहार हुआ
न कांपा कलेजा जयचंदों का
दुश्मन का सा व्यवहार हुआ

यें दोस्त नहीं आतंकी थे
जमीर था जिनका बिका हुआ
वो करते सौदा इंसानों का
अब जाकर कुछ आराम हुआ

आओ मिलकर करें दुआ हम
खुशहाली की फिर से ब्यार हो
फिरदौस की जन्नत फिर से महके
फिर चैनो-अमन और प्यार हो ।



इंशफ – सुनील कुमार गुप्ता

वृक्ष की आत्मा ने
धर्मराज की अदालत का
दरवाजा खटखटाया
कत्ल का था आरोप
आदमी को मुजरिम ठहराया

श्रीमान, मैं बरसों से हूँ इसकी
सेवा करता आया
धूप में दी इसे छाया,
शुद्ध ऑक्सीजन से
मैंने इसके जीवन को सजाया

पेट भरने के लिए दिये
फल-फूल अनेक
और इसे देने के लिए उर्जा
अपने तन तक को जलाया
पर इस एहसान फरामोश को
हम पर जरा भी तरस न आया

अपने स्वार्थ को साधने के लिए
हम वृक्षों की बस्ती को दिया उजाड़
पूरे परिवार को यमलोक पहुंचाया
हमारे साथ-साथ उजड़ गये
लाखों आशियाने

जालिम ने जंगली जीवों और
परिदों पर भी तरस नहीं खाया।
धर्मराज की अदालत में
आदमी को बुलाया गया।



उस पर जो आरोप था
पढ़ कर सुनाया गया
अपने पक्ष में देते हुए सफाई
आदमी ने विकास का मुद्दा उठाया

धरती पर विकास की खातिर
मैंने सिर्फ इन्हें रास्ते से हटाया
सारी उपजाऊ भूमि पर
इन्होंने कब्जा जो है जमाया

धर्मराज ने तुरंत अपना फैसला सुनाया
आदमी को उसके कर्म के लिये दोषी ठहराया
विकास के नाम पर दी थी जो उसने दलील
उसी के लिए उसे दोषी पाया

सजा में उसे न तो दी फांसी
और न ही दिया आजीवन कारावास
बाढ़, सूखा, जलजला
और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से
लड़ने के लिए उसे
धरती पर वापस भिजवाया।



गज़ल – रिकू कश्यप



मैं और मेरे एहसास
 अक्सर तन्हाई में रोते हैं।
 सिर्फ कलम साथ देती है मेरा
 बाकी चैन से सोते हैं।।
 हसरत थी दिल को जिसकी
 वो कभी हासिल नहीं हुआ।
 इस जिंदगी को जीने के
 पैमाने अजीब होते हैं।।
 रेत से बना आशियां
 ढह गया एक पल में।
 बिन इन्सान के तो
 मकान भी खंडहर होते हैं।।
 सागर की लहरें अक्सर
 आती हैं साहिल से मिलने।
 बयां-ए-दर्द करने के तरीके
 उनके अजीब होते हैं।।
 जाते हैं मयखाने में
 वही शख्स अक्सर।
 जो दर्द-ए-मोहब्बत
 दवा की तलाश में होते हैं।
 मैं और मेरे एहसास
 अक्सर तन्हाई में रोते हैं।।

सूखे हुए फूलों से
 गुलिस्तां बनाए नहीं जाते।
 उजड़े हुए चमन फिर से
 महकाए नहीं जाते।।
 आशियां बन जाए
 जब कोई खंडहर।
 हाथों से फिसलते रेत पर
 महल फिर बनाए नहीं जाते।।
 अपने ही देते हैं अक्सर
 अपनों को धोखा।
 उन रिश्तों से फिर
 रिश्ते निभाए नहीं जाते।।
 मिट्टी की पकड़ देखी है
 हमने बहुत करीब से।
 फिसलने के डर से
 संगमरमर लगाए नहीं जाते।।
 हसरतों से भरा हुआ है
 ये दिल आज भी उनकी।
 लेकिन हर एहसास-ए-दिल
 कलम से बताए नहीं जाते।।



भारत माँ तुझे सलाम

— शिवांश कश्यप



भारत मां तुझे सलाम,
भारत मां तुझे सलाम।
तेरे बच्चे शीश झुकाकर,
गाते हैं तेरा गुणगान।

भारत मां तुझे सलाम,
भारत मां तुझे सलाम।

इस पावन धरती पर तूने
हम बच्चों को जन्म दिया
इस धरती से अन्न—जल देकर
पाल—पोस कर बड़ा किया
ममता, करुणा, प्रेम प्यार
से जन—जन का किया कल्याण
संस्कारों की माला पहनाकर
बनाया एक आदर्श इन्सान।

भारत मां तुझे सलाम
भारत मां तुझे सलाम।
तेरे बच्चे शीश झुकाकर,
गाते हैं तेरा गुणगान।



तेरी इस पावन धरती पर
गंगा—यमुना बहती हैं
सूरज सबसे पहले उगता
किरणें दस्तक यहां देती हैं
हिमालय पर्वत तुझे
ताज मुकट पहनाता
सागर तेरे चरण धुलाता
कश्मीर की घाटी
बढ़ाए तेरी शान।

भारत मां तुझे सलाम,
भारत मां तुझे सलाम।



कोल्हू – महेन्द्र सिंह

हर की भूमि हरियाणा की ऐतिहासिक नगरी
जीन्द के निकट मात्र नौ किलोमीटर की दूरी पर
मोहनजोदड़ो नगर की तर्ज पर
बसा छोटा सा गांव— जीतगढ़,
उसकी पूर्व दिशा में

तालाब के पास

बाग के बाईं ओर

कोल्हू के निशां जर्जर अवस्था में
वर्षों से दे रहे हैं सबूत उसके होने का,
उस जगह खेलते हैं बच्चे

छुपा-छिपाई

सिखर दोपहरी में,

थके हारे कुत्ते भी

सो जाते हैं कोल्हू की बड़ी हौदी में

जो काम आती थी

गुड़ बनाने में,

साथ में है सुलतान महाराज का स्थान

हर छमाही में वीरवार को पूजता है सारा गांव

कोल्हू है मुख्य स्थान

बच्चों के एकत्रित होने का

बांटा जाने वाला प्रसाद इकट्ठा करने का

साथ में लगते बाग में से अमरुद तोड़कर

उस हौदी में छुपकर खाने का

स्कूल से बंक मारकर

उसमें बस्ता छुपाने का,

तीर्थ स्थान कहा जा सकता है

बच्चों के लिए।

कभी होती थी यहां 24 घंटे चहल-पहल

गन्ने के सीजन पर

कोल्हू ही होता था गांव का आकर्षण

बारी-बारी सब लाते थे अपना-अपना गन्ना

बनाने के लिए गुड़-शक्कर

बंटाते थे काम में सभी एक-दूसरे का हाथ,



बच्चे भी रहते थे कोल्हू के आस पास
खाने को ताजा व गर्म गुड़
जो बांटा जाता था प्रत्येक पहले घाण पर
खाते समय गिर जाता था
बच्चों के हाथों से कुछ गुड़
जो होता था केन्द्र बिन्दू
गांव के कुत्तों के लिए
सीजन में कुत्ते भी नहीं जाते थे
कोल्हू को छोड़कर,
रात दिन, गन्ने को खेत से लाना
गुड़ को घर व बाजार ले जाना
मेला सा लगा रहता था रात-दिन।

मन में ज्यों ही तुलना का विचार आया
खुद को ही अजीब कश्मकश में पाया।

आज भी वीरवार के दिन

पूरा गांव हो जाता है इकट्ठा

आज भी बच्चों के लिए है

ये आकर्षण का केन्द्र

कुत्ते आज भी घूमते रहते हैं

इसके इर्द-गिर्द,

कोल्हू ने नहीं खोई है अपनी सार्थकता

महत्व उस दिन भी था, महत्व आज भी है

पर शायद उद्देश्य बदल गया।



मौसम – हरबन्स कौर



ईश्वर ने देखो कैसे—कैसे अजब मौसम बनाए।
कभी ताप से तप्ती धरती कभी रहते बादल छाए॥



बसंत ऋतु

पिछले दिनों धुंध और कोहरे ने,
कैसे—कैसे भयानक रूप दिखाए।
दिन में भी कुछ दिखाई न दे,
मनुष्य, पशु, पक्षी सब बहुत घबराए॥



शरद ऋतु



ग्रीष्म ऋतु

पतजड़ ने फिर अपना रूप दिखाया,
धरती पर मानों पत्तों का बिस्तर बिछाया।
वर्षा, आंधी ने फिर भंयकर रूप दिखाया,
चारों तरफ है हाहाकार मचाया॥



हेमंत ऋतु

बिजली देखो कड़क—कड़क कर,
सबको बहुत डरा रही है।
वाह रे ईश्वर कैसी तेरी लीला,
प्रकृति तांडव दिखा रही है॥



वर्षा ऋतु

हर मौसम के रंग जुदा हैं,
हर मौसम है खुद में प्यारा।
किसी को कोई मौसम भाए,
हर मौसम का अंदाज है न्यारा।



शीत ऋतु

ईश्वर ने देखो कैसे—कैसे अजब मौसम बनाए॥
कभी ताप से तप्ती धरती कभी रहते बादल छाए॥



वर्षा ऋतु – एकता



हरी-भरी मादक ऋतु ने हमको उन्मत बनाया
मेघों ने गरज-गरज कर मादक संगीत सुनाया।

बच्चों ने भी नाव चलाने की पूरी योजना बनाई,
आंगन में जब धरती के नन्ही बूंदे आई।

नभ में उड़ते पक्षियों ने फिर मेघों के साथ ताल बिठाई
कहीं मोर, कहीं पपीहे ने फिर मिलकर रागिनी गाई।

सुखे पौधों में फिर प्राणों की लहर आई,
इठलाती सरिताओं ने फिर अपनी गति दिखाई।

चहुं ओर नव जीवन है, प्यासी धरती तृप्त हुई
नन्ही प्यारी बूंदो से प्रकृति फिर से सिक्त हुई।

नभ की बूंदे आई धरती पर, झूम उठे सब नर-नारी,
यह प्रकृति का त्यौहार है, पल्लवित हो उठी धरती सारी।

हरी-भरी मादक ऋतु ने हमको उन्मत बनाया,
मेघों ने गरज-गरज कर मादक संगीत सुनाया।



भावप्रधा कलाज्ञिया

दो कहानियाँ

रविन्द्र साहित्य

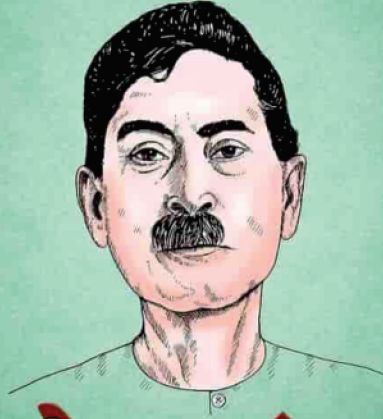
काबुलीवाला

दुलहन

इस पुस्तक की विश्व की
अनेक भाषाओं में करोड़ों प्रतियाँ
बिक चुकी हैं।

मानसरोवर

प्रेमचंद की मशहूर कहानियाँ



प्रेमचंद

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
एक मूल्यांकन

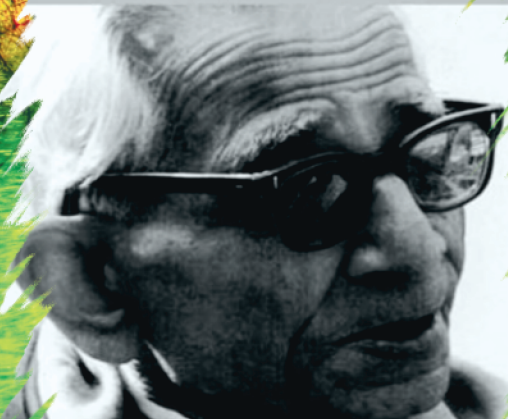


सम्पादक: दिनेश कुमार

कहानी

यशपाल

प्रतिनिधि
कहानियाँ



सिंहावलोकन

जैनेन्द्र कुमार

आकाशदीप

जयशंकर प्रसाद



लड्डू का स्वाद

— विनय कुमार गर्ग



हेमंत आज बहुत खुश था क्योंकि आज उसने पहली बार अपने सपनों की रानी से मोबाइल पर बात की थी, इसलिए आज उसका दिल बल्लियों उछल रहा था । कुछ ही दिनों बाद वह खास दिन भी आने वाला था जिसका इंतजार हर युवा को होता है । उसका विवाह होने जा रहा था । उनका विवाह दोनों के माता-पिता की पसंद से अरेंज किया गया था ।

हेमंत जब पहली बार अपनी भावी पत्नी (रूपा) को देखने गया तो एक बार तो उसे अपनी किस्मत पर यकीन ही नहीं हुआ कि ईश्वर ने उसके जैसे मध्यम दिखने वाले युवक के लिए इतना खूबसूरत जीवन-साथी बनाया होगा । साथ ही डर भी रहा था कि लड़की को वो भी पसंद आएगा या नहीं ।

हेमंत के लिए वह पहली मुलाकात बहुत ही यादगार थी । क्योंकि आज उसकी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण फैसला जो होने जा रहा था ।

पहली मुलाकात में, रूपा और हेमंत, दोनों काफी समय तक, कन्धिओं से, चोरी-छिपे एक दूसरे को देखते रहे । जिससे हेमंत के ऊपर एक अजीब सा नशा छाने लगा, उन दोनों के घरवालों ने आपस में क्या बातें की, उसे मानो कुछ पता ही नहीं चला, क्योंकि उसका सारा ध्यान तो रूपा की तरफ ही था ।

अचानक साथ में बैठे हेमंत के जीजाजी ने उसे कुहनी मारी ।

जिससे हेमंत की तन्द्रा टूटी ।

जीजाजी बोले, साले साहब ! कहाँ खोये हो ? रूपा जी से कुछ बात करनी है तो कर लो नहीं तो घर जा कर पछताओगे ।

उनकी बातें सुनकर, रूपा की माँ भी बोली, हाँ बेटा ! आप दोनों अलग बैठकर, एक दूसरे से बातें कर लो, एक दूसरे के विचार जान लो ।

इतना कहकर सभी लोगों ने उन दोनों को ऊपर वाले कमरे में बातचीत करने के लिए भेज दिया ।

ऊपर कमरे में वे दोनों अकेले थे और हेमंत के लिए यह शायद पहला मौका था, कि जब वह किसी अनजान लड़की के साथ एक कमरे में अकेला था । जिसके कारण उसका दिल जोरों से धड़क रहा था और हालत भी पतली हो रही थी ।

हेमंत रूपा से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था और सन्नाटे में समय ऐसे ही बीतता जा रहा था ।

समय बीतने से हेमंत को यह डर भी सता रहा था, कि कहीं रूपा के घर वाले आकर उसे वापिस

न ले जाएं। साथ ही हेमंत के भीतर का मर्द भी उसे धिक्कार रहा था, कि मर्द होकर लड़की से घबरा रहा है और बात नहीं कर पा रहा है।

आखिरकार, हिम्मत जुटाकर हेमंत ने ही बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

रुपाजी ! आप मुझे बहुत पसंद है। परन्तु, क्या मैं भी आपको पसंद हूँ ?

हेमंत का यह सवाल पूछने का मन तो नहीं था, पर तहजीब के नाते पूछना भी जरूरी था। क्योंकि उसके मन में व्यग्रता भी थी कि कहीं ना सुनने को मिल गया तो उसके सपनों का शीशमहल चूर-चूर हो जायेगा।

परन्तु आज जैसे हेमंत का भाग्यशाली दिन था और फिर हुआ भी वही, जिसके लिए वो मन ही मन मरा जा रहा था।

हेमंत के इस भोले से सवाल पर रुपा ने शर्माकर हाँ कर दी। हेमंत को सहसा अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ और गफलत में फिर से वही सवाल दोहरा बैठा, रुपा ने इस बार सिर्फ अपनी गर्दन हिलाकर अपनी स्वीकृति दे दी।

रुपा के सकारात्मक जवाब से हेमंत आनंद के गहरे सागर में गोते लगाने लगा, उसके हाथ-पांव जैसे हल्के पड़ने लगे और सपने उड़ान भरने लगे।

इस बातचीत के टूटे सिलसिले को इस बार रुपा ने आरम्भ किया और बातचीत पढाई-लिखाई, पसंद-नापसंद, भविष्य के सपनों को लेकर, जिंदगी के प्रति नजरिए को लेकर चल निकली।

इसी बीच हेमंत रुपा से बोला, रुपा जी ! पढाई के सिलसिले में, मैं काफी समय तक घर से बाहर ही रहा हूँ, इसलिए मेरी दिली ख्वाहिश है कि विवाह के बाद मेरे माता-पिता हमारे साथ ही रहें।

हेमंत की बात सुनकर रुपा कुछ पल के लिए मौन हो गई, फिर सकुचाते हुए संक्षिप्त सा जवाब देते हुए बोली, हाँ-हाँ, इसमें बुरा क्या है।

रुपा की बात सुनकर, मानो, हेमंत के मन से एक बड़ा बोझ सा उतर गया हो।

तभी रुपा की भाभी उन्हें लेने ऊपर कमरे में आ गई और वे दोनों नीचे आ गए।

नीचे आकर भाभी ने सबको खुशखबरी सुना दी कि भावी वर-वधु ने एक-दूसरे को पसंद कर लिया है। जिसे सुनकर दोनों पक्षों ने एक-दूसरे को बधाई दी।

रीति-रिवाजनुसार दोनों पक्षों ने रस्में अदा की। हेमंत-रुपा दोनों फूले नहीं समा रहे थे क्योंकि आज उनके जीवन की नई पहल जो होने जा रही थी।

विवाह से पहले का समय कैसे पंख लगाकर उड़ गया, दोनों को पता ही नहीं चला और कुछ ही दिनों बाद हेमंत-रुपा की शादी भी हो गई।

शादी के लाल जोड़े में रुपा, मानो स्वयं किस्मत की देवी बनकर, हेमंत के घर चली आई। हेमंत के माँ-बाबूजी जी ने नववधु का स्वागत आरती उतार कर किया।



रूपा के ससुराल आ जाने से, हेमंत का निष्प्राण घर मानो सांस लेने लगा था, क्योंकि उसकी माँ तो जाने कब से इस इन्तजार में थी कि कब हेमंत की शादी हो और उसकी बहु आकर इस बिखरे घर-परिवार को संभाल ले ।

हेमंत के नौकरी करने से पहले, हेमंत के बाबूजी का मेरठ में छोटा-मोटा कारोबार था जिसके कारण हेमंत अपनी पढ़ाई पूरी कर पाया और अब वह करीब चार सालों से, दिल्ली की एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी कर रहा था ।



पुत्र से अलग रहने के कारण, हेमंत के माँ-बाबूजी मेरठ में अकेले रहते-रहते जैसे चिड़चिड़े से हो गए थे क्योंकि अपनी हर छोटी-मोटी जरूरतों के लिए उन्हें पड़ोसियों पर निर्भर रहना पड़ता था, उनकी मनुहार करनी पड़ती थी क्योंकि हेमंत तो अपनी प्राइवेट नौकरी के कारण नियमित रूप से उनकी देखभाल नहीं कर पाता और हेमंत की बड़ी बहन, शादी के बाद, अपने ससुराल में पारिवारिक जिम्मेदारियों में व्यस्त रहती ।

यही वजह थी कि हेमंत के माँ व बाबूजी अपनी बढ़ती उम्र, अकेलेपन व वृद्धावस्था से जुड़ी बीमारियों से जूझने के कारण, अब किसी सहारे की तलाश में थे । परन्तु, अपनी जड़ों से जुड़ाव के कारण, अपना घर छोड़कर, हेमंत के साथ दिल्ली रहने के लिए भी तैयार नहीं थे ।

उधर दिल्ली में, हेमंत भी अकेले रह-रहकर, खुद घर की साफ-सफाई, खाना बनाने, कपड़े-लत्ते धोने, इत्यादि से ऊब चुका था । साथ ही, अपने सहकर्मियों के सुखद वैवाहिक-जीवन को देख-देखकर मन ही मन कुढ़ता रहता था और अपना घर बसाने के सपने देखता रहता था ।

इसलिए हेमंत के पूरे परिवार को बहु के रूप में रूपा का बड़ी बेसब्री से इन्तजार था ।

शादी के शुरू के छह महीने तो कैसे गुजर गए किसी को कुछ पता ही नहीं चला । कभी हेमंत रूपा को दिल्ली ले जाता, तो कभी रूपा को उसके मायके (गाजियाबाद) छोड़ देता, तो कभी रूपा को मेरठ अपने माँ व बाबूजी के पास ले जाता । हेमंत को यह सब एक सपना सा लगता कि जीवन में एक अनजान व्यक्ति के जुड़ जाने से जीवन इतना सुखमय भी हो सकता है ।

शुरू-शुरू में, हेमंत जब रूपा को अपने घर मेरठ, माँ व बाबूजी के पास ले जाता तो रूपा बिना किसी ना-नुकर के सहज ही चल पड़ती थी । मगर धीरे-धीरे समय जैसे-जैसे बीतता जा रहा था तो हेमंत को लगने लगा था कि रूपा को जैसे दिल्ली ने जकड़ लिया हो, क्योंकि जैसे ही रूपा को महसूस होता कि छुट्टियां आने वाली हैं और हेमंत घर जाने का प्रोग्राम बनाने वाला है तो रूपा कभी अपनी तबियत का, तो कभी किसी आवश्यक कार्य का बहाना कर मेरठ जाने से कतराने लगी ।

फलतः हेमंत और रूपा का मेरठ जाना कम होने लगा और उधर मेरठ में, बेटे-बहु का आना कम होने से, हेमंत के पड़ोसी आये दिन उसके माँ-बाबूजी से पूछते कि हेमंत कब आएगा, उसकी बीवी उनकी देखभाल करने के लिए, उनके पास आकर क्यों नहीं रहती आदि-आदि ।

अब तो हेमंत के माँ-बाबूजी को भी लगने लगा कि हेमंत ने नई-नवेली के चक्कर में अपने माँ-बाप को अकेले मरने के लिए छोड़ दिया है क्योंकि अब छुट्टिया आने पर हेमंत कभी-कभार ही मेरठ आ पाता और जितने दिन भी हेमंत रूपा के साथ मेरठ में रहता, रूपा का व्यवहार अपने सास-ससुर के साथ और हेमंत के साथ रुखा सा ही रहता । हेमंत व उसके माँ-बाबूजी को लगता कि शायद रूपा को बार-बार मेरठ आना और उनके पुराने घर में रहना पसंद नहीं है ।

परन्तु, घर के ऐसे माहौल को देखकर, हेमंत के माँ-बाबूजी को बड़ा दुःख होता और रह-रहकर उन्हें यही विचार आता कि इससे अच्छा तो वो हेमंत और बहु को बुलाने की जिद ही ना करते । अतः अब उन्होंने आगे से हेमंत को बार-बार मेरठ आने के लिए कहना छोड़ ही दिया ।

शादी के बाद, हेमंत की व्यक्तिगत जिंदगी वैसे तो खुशहाल थी, क्योंकि, रूपा से उसे वो हर सुख मिल रहा था, जो एक स्त्री दे सकती है । किन्तु, हेमंत के मन में फिर भी एक विषाद सा था कि रूपा उसके माँ-बाबूजी को अभी तक अपना नहीं सकी है ।

हेमंत आए दिन इसी उहापोह में लगा रहता, कि कैसे-किस तरह से, माँ-बाबूजी के साथ रूपा की पटड़ी बैठाए और कैसे उसे माँ-बाबूजी के पास रहने के लिए राजी करे ।

हेमंत को रोज-रोज परेशान देखकर, एक दिन सहसा उसके एक मित्र ने सुझाव दिया, "हेमंत तुम कब तक भाभी को जबरदस्ती मेरठ ले जाते रहोगे ? अपने माँ-बाबूजी को दिल्ली, साथ रहने के लिए राजी क्यों नहीं कर लेते, इससे तुम्हारे माँ-बाबूजी की समस्या भी हल हो जाएगी और रूपा भी बार-बार मेरठ जाने से परेशान नहीं होगी ।"

अपने मित्र की बात सुनकर, खुशी से, हेमंत की आँखों में चमक आ गई ।

क्योंकि, माँ-बाबूजी को दिल्ली में, साथ रखने से, हेमंत को भी रूपा से अलग नहीं होना पड़ेगा और बार-बार मेरठ जाने से रूपा जी का जो मुंह फूल जाता है, पुनः उन परिस्थितियों का सामना भी नहीं करना पड़ेगा ।

हेमंत को अपनी सबसे बड़ी परेशानी का हल मिलता देख, उसके दिल को सुकून मिलने लगा । मन में बड़ा हल्कापन सा महसूस होने लगा, मानो उसकी सारी दुविधाओं का अंत हो गया हो ।

पर मन में थोड़ा संशय जरूर था कि पता नहीं माँ-बाबूजी दिल्ली आने के लिए तैयार होंगे या नहीं । साथ ही हेमंत को यकीन भी था कि अपने बेटे की खुशी के लिए, माँ-बाबूजी, दिल्ली आने के लिए, शायद मान भी जाए ।

घर आकर, हेमंत ने खुशी-खुशी, रूपा के सामने, अपने माँ-बाबूजी को दिल्ली लाने की मंशा जाहिर कर दी, प्रत्युत्तर में रूपा ने भी, अनमने से भाव से हेमंत की मंशा पर अपनी मोहर लगा दी ।

रूपा की हामी सुनकर, हेमंत को रूपा के ऊपर बहुत प्यार आया और उसने प्यार से रूपा की पेशानी को चूम लिया ।

उत्साहित होकर हेमंत ने अपने माँ-बाबूजी को फोन कर, उन्हें दिल्ली साथ लिवा लाने की अपनी पेशकश जाहिर कर दी । हालाँकि, हेमंत के माँ-बाबूजी को इस तरह के न्योते की कतई आशा नहीं थी और ना ही मानसिक रूप से, अभी तक वे अपने पैतृक निवास से अलग होने के लिए तैयार ही थे । परन्तु, पुत्रमोह और हेमंत के बार-बार जिद की वजह से, काफी ना-नुकर के बाद, हेमंत के माँ-बाबूजी दिल्ली

आने के लिए राजी हो ही गए ।

खुशी-खुशी हेमंत अपने माँ-बाबूजी को मेरठ से दिल्ली ले आया ।

हालांकि, हेमंत के माँ-बाबूजी को अपना पैतृक-आवास, अड़ोस-पड़ोस छोड़ने का गम तो काफी हुआ, परन्तु, दिल्ली पहुँच कर, अपने बच्चों के साथ रहने के सपने और बच्चों की खुशियों में शामिल होने के एहसास ने, उनके मन में भी एक सुहानी सी खुशी भर दी ।



रूपा भी अपने पति की खुशी के लिए, घर में पधारे, अपने सास-ससुर के साथ एडजस्ट करने में लग गई । रोज-रोज हेमंत के कहे अनुसार उसके माँ-बाबूजी की पसंद का खाना बनाती और उनका ध्यान रखने की कोशिश करती ।

हेमंत को लगा अब उसका जीवन पटड़ी पर आ गया है क्योंकि, अब उसके जीवन की हर तमन्ना, हर ख्वाहिश पूरी हो गई है । हो भी क्यों ना, एक प्यारी सी बीवी तो पहले से ही उसके पास थी और अब उसके जन्मदाता, उसके माँ-बाबूजी, जिनके प्यार और सानिध्य के लिए, दिल्ली सेटल होने के बाद से ही, वो हमेशा के लिए बेचैन था, वे भी उसके पास ही रह रहे हैं । ये सब सोच-सोचकर हेमंत को मन ही मन बड़ा संतोष मिलता ।

क्योंकि, हेमंत काफी समय से, अपने माँ-बाबूजी से दूर था इसलिए अपना खालीपन भरने के लिए, हेमंत ऑफिस जाने से पहले का समय और ऑफिस से आने के बाद से सोने तक, माँ-बाबूजी के साथ बैठकर घंटों बातें करता ।

रूपा दिन भर, अपने घर, रसोई इत्यादि कामों में लगी रहती । देर रात तक, रूपा का घर का काम खत्म हो पाता और हेमंत भी, देर रात ही, अपने माँ-बाबूजी के कमरे से अपने कमरे में आ पाता । उसके बाद हेमंत रूपा से अपने तन-मन की बातें करता और अपनी दिल की रानी को भरपूर प्यार देता क्योंकि, रूपा उसके माँ-बाबूजी का जी-जान से ख्याल जो रख रही थी ।

रूपा को भी जैसे अपनी पूरे दिन के व्यस्त दिनचर्या के बाद, उन्ही प्यार भरे लम्हों का इन्तजार रहता, जिनमे रूपा को भी जीने का अवसर मिलता ।

इसी तरह हफ्ता-दस दिन गुजरने के बाद, रूपा परेशान सी रहने लगी, उसे अपने ही घर में घुटन सी लगने लगी और लगने लगा कि हेमंत दिन में, जानबूझकर उसकी अनदेखी करता है और उसके हिस्से का प्यार भी अपने माँ-बाप के ऊपर लुटा रहा है । और भी पता नहीं इसी तरह के कई उलटे-पुल्टे विचार रूपा के मन में आने शुरू हो गए ।

रूपा हेमंत का अपने प्रति बदलते व्यवहार का कारण तलाशने लगी तो उसे लगने लगा कि उसे दिलोजान से चाहने वाला उसका पति हेमंत, उसके सास-ससुर के पास रहने की वजह से, उससे दूर हो रहा है जिससे उसका वैवाहिक जीवन खराब हो रहा है ।

रूपा अपने जीवन में अचानक आये इस बदलाव की चर्चा कभी अपने पड़ोस की औरतों से करती

तो कभी अपनी माँ व बड़ी बहनों से करती, उन सबसे चर्चा के परिणामस्वरूप, रूपा को अब पक्का यकीन हो चला था कि उसकी सारी समस्याओं की जड़ उसके सास-ससुर हैं और यदि उसके सास-ससुर उसके पास कुछ और दिन रुके तो उसका तलाक होना तय है ।

फलस्वरूप, रूपा विषादग्रस्त रहने लगी और अपने सास-ससुर को अपने पक्के-दुश्मन की निगाह से देखने लगी ।

हेमंत तो अभी तक खुशियों के सातवें आसमान पर ही उड़ रहा था और सावन के अंधे की भांति उसे चारों तरफ हरा ही हरा दिख रहा था ।

रूपा ने धीरे-धीरे, हेमंत के माँ-बाबूजी के साथ अपना कड़ा रुख अपनाना शुरू कर दिया । हेमंत की अनुपस्थिति में वो उन्हें खाना कच्चा-पक्का व वक्त-बेवक्त देने लगी । वो यदि टेलीविजन चलाते तो तुरन्त आकर टेलीविजन बंद कर देती कि बिजली का बिल ज्यादा आ जाएगा । अगर माँ-बाबूजी घर में पंखा चलाकर बैठते, तो रूपा तुरन्त आकर उनका पंखा बंद कर देती कि पंखा ज्यादा प्रयोग करने से जल्दी खराब हो जायेगा । हालांकि, हेमंत के माँ-बाबूजी रूपा के इस दुर्व्यवहार की चर्चा हेमंत से कभी नहीं करते, बस खून का घूँट पीकर रह जाते ।

किन्तु, फिर भी यदि कभी, हेमंत के माँ-बाबूजी खाने में कुछ कमी बता देते तो रूपा रो-रोकर पूरा घर सिर पर उठा लेती और हेमंत के साथ झगड़ने लगती कि तुम्हारे माँ-बाबूजी निहायत ही चटोरे हैं और बिलकुल भी एडजस्ट नहीं करते हैं और जानबूझकर मेरे खाने को खराब बताते हैं ।

हेमंत को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि अचानक से उसके घर का माहौल क्यों बदल गया है और उसके माँ-बाबूजी का ख्याल रखने वाली रूपा ऐसा व्यवहार क्यों कर रही है ।

धीरे-धीरे स्थिति और बिगड़ने लगी, घर में आये-दिन महाभारत का सा माहौल रहने लगा और जबरन उसे भी बीच में घसीटा जाने लगा । अब एक तरफ रूपा के साथ जुड़े रूमानी रिश्ते की कशिश और प्यार था तो दूसरी तरफ बूढ़े माँ-बाप का ख्याल दिल को बेचैन करने लगा । हेमंत को समझ नहीं आ रहा था कि वह इन परिस्थितियों से कैसे निपटे ।

अब हेमंत के साथ भी रूपा की तल्लियां बढ़ने लगी, फिर भी हेमंत हर बार रूपा को प्यार से मनाने की कोशिश करता क्योंकि वह रूपा से झगड़कर अपने माँ-बाबूजी का सानिध्य नहीं खोना चाहता था ।

किन्तु, रूपा तो जैसे अपने सास-ससुर से जल्द से जल्द छुटकारा पाने के लिए बेताब थी और नित नई-नई परेशानियां खड़ी करने लगी । कभी रूपा हेमंत के साथ, तो कभी रूपा हेमंत के माँ-बाबूजी के साथ, ऊँची-ऊँची आवाज में बहस करने लगती ।

इन हालातों में, हेमंत को अब लगने लगा था कि सभी का एक साथ, एक छत के नीचे रहना अब नामुमकिन है, क्योंकि, हेमंत की



रूपा के मान-मनोव्यवहार की सभी कोशिशें लगातार नाकाम होती जा रही थी । हेमंत रूपा को लाख समझाता कि उसे तलाक के लिए कोई नहीं उकसा रहा है और ना ही उसे कोई दूसरी शादी करनी है । मगर लगता जैसे रूपा को हेमंत की किसी भी दलील से कोई मतलब-वास्ता ही ना हो ।

हेमंत भी इसलिए इस रोज-रोज की खिच-खिच से तंग आकर, हर समय तनाव में रहने लगा और खुद को कोसता कि उसकी किस्मत में ऐसी बीवी ही क्यों लिखी थी, जो उसके माँ-बाबूजी को शान्ति से साथ रहने नहीं देती । वह रोज-रोज कभी रूपा को समझाता तो कभी माँ-बाबूजी को, परन्तु, माहौल जस का तस ।

तंग आकर, हेमंत एक तरह से बहरा सा बन गया, अब ना तो वह रूपा की किसी बात को तरजीह देता और ना ही अपने माँ-बाबूजी की । उसे लगता कि वह कुंए से निकल कर खाई में गिर गया है क्योंकि पहले जब माँ-बाबूजी मेरठ में रहते थे, तो मात्र यही चिंता सताती थी कि वो पता नहीं कैसे होंगे ? और उनके साथ ना रहने का गम भर था । किन्तु, रूपा व माँ-बाबूजी का एक साथ रहना इतना मानसिक कष्टकारी होगा, इसका उसे दूर-दूर तक अंदेशा ना था ।

हेमंत के माँ-बाबूजी, को दिल्ली आये अभी एक माह भी पूरा नहीं हुआ था, लेकिन पुत्रवधु के व्यवहार के कारण, अब उनका दिल्ली में और अधिक रुकना, उनके लिए दुश्कर होता जा रहा था और उनका अपने बच्चों के साथ रहने का सपना अब धीरे-धीरे धूमिल होता जा रहा था ।

ऐसे ही एक अवसर पर, रूपा अपनी सास से फिजूल के मसले पर तेजी से चिल्ला-चिल्लाकर बहस कर रही थी तो हेमंत की माँ को भी क्रोध आ गया और वो भी रूपा के लहजे में ही जवाब देने लगी, किन्तु, बूढ़े एवं लाचार शरीर के साथ, हेमंत की माँ उस तीखी और फिजूल बहस को न झेल पाई और उनका ब्लड-प्रेसर बढ़ने से वही चक्कर खाकर गिर गई ।

खुशकिस्मती से हेमंत भी उस समय घर पर ही था इसलिए वह तुरंत अपनी माँ का जरूरी ईलाज करा पाया ।

अब किसी के पास कुछ कहने-सुनने की गुंजाइश नहीं थी ।

अगले दिन हेमंत के माँ-बाबूजी ने चुपचाप अपना सारा सामान पैक कर लिया और हेमंत उन्हें वापिस मेरठ छोड़ आया ।

हेमंत अपने माँ-बाबूजी को मेरठ छोड़कर, वापिस रूपा के पास दिल्ली आ गया । हेमंत के संयुक्त परिवार के सपने का ऐसा दुखद अंत होगा ये सोच-सोचकर, हेमंत का दिल रो रहा था, किन्तु, उसके दिमाग में यह सोचकर शान्ति थी कि अब उसके घर में रोज-रोज के झगड़े नहीं होंगे और ना ही उसे रूपा के ताने सुनने पड़ेंगे ।

हेमंत की संयुक्त परिवार की परिकल्पना अब पूरी तरह से तार-तार हो चुकी थी अब अगर कुछ बाकी था, तो वो थी, रिश्ते निभाने की रस्में और समाज के बंधनों में बंधा पति-पत्नी का रिश्ता ।



हेमंत का वैवाहिक जीवन अब थोड़ा फीका सा पड़ गया था, क्योंकि, जिस औरत को पत्नी के रूप में पाकर, कभी वह खुद को सबसे बड़ा भाग्यशाली समझता था । रूपा जिसे वह अपने लिए ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान मानता था और फूला नहीं समाता था । जिसकी सुन्दरता पर वह हमेशा अभिभूत रहता था, अब वह सुन्दरता की देवी उसे जी का जंजाल प्रतीत होती थी । अब उस लगाव में, अपनेपन में कहीं दरार सी आ गई थी ।

दूसरी तरफ, रूपा को अब जैसे हेमंत की भावनाओं की कोई परवाह ही नहीं रह गई थी । रूपा अब और ज्यादा उन्मुक्त होकर अपनी मौज-मस्ती में, अपने मायके वालों में और एक तरह से मतलब-परस्त होकर जीने लगी थी ।

हेमंत कभी-कभी गुजरे-कल को सोचकर बहुत ही अधीर हो जाता, कभी उसे ख्याल आता कि जब तक उसका विवाह नहीं हुआ था तब वह अपने दोस्तों के सुखी वैवाहिक-जीवन को देख-देखकर, खुद के विवाह के सपने देखता था । परन्तु, विवाह के बाद, उसका खुद का वैवाहिक-जीवन कितना सुखद है ? अब उसे पता चल रहा था ।

हेमंत कभी-कभी ऐसे संयुक्त परिवार भी देखता, जहाँ माँ-बाप अपने पुत्र-पुत्रवधु व उनके बच्चों के साथ ससम्मान व खुशी-खुशी रहते हैं, यह देखकर हेमंत का सिर, उस घर की बहुओं के प्रति आदर से झुक जाता । फिर, साथ ही खुद के मन में भी एक टीस सी उठने लगती, कि उसके माँ-बाबूजी जीवित होते हुए भी, उसकी पत्नी के कारण, उनसे अलग अकेले रह रहे हैं ।



हेमंत के विवाह के दस साल बीत गए हैं, मगर रूपा के व्यवहार में किंचित भी बदलाव नहीं आया । आज भी, माँ-बाबूजी को घर लाना तो दूर, यदि कभी उनका फोन भी आ जाता तो रूपा बड़बड़ाने लगती और हारकर हेमंत को फोन काटना ही पड़ता ।

हालातों से समझौता कर, हेमंत व उसके माँ-बाबूजी ने अपने-अपने सीने पर पत्थर रख लिया । हेमंत अब अकेले माँ-बाबूजी के घर साल-छः महीने में चक्कर लगा आता, कभी-कभार फोन पर उनके हाल-चाल ले लेता । माँ-बाबूजी ने भी सब्र कर लिया । यदि उनकी कभी कुछ मजबूरी होती तो अड़ोसी-पड़ोसियों की मदद ले लेते ।

हेमंत बहुधा, मन ही मन, अपने जीवन की उलझी गुत्थी सुलझाने की कोशिश में, स्वम में उलझा रहता, कि कहाँ उससे गलती हो गई? या फिर, किससे गलती हुई? जिसके कारण इतने सुन्दर रिश्ते की ऐसी परिणिति हुई । कभी उसे लगता कि शायद उसे और उसके माँ-बाबूजी को साथ रहने के अरमान को शादी के दो-एक साल बाद पूरा करना चाहिए था, तो कभी उसे अपनी ही सोच पर क्रोध आता और मन कहता कि नहीं रूपा जी ने शादी के दो साल भी यही करना था । हेमंत को कभी ऐसा ख्याल आता

कि उसे किसी अनाथ लड़की से शादी करनी चाहिए थी जो खुशी-खुशी उसके माँ-बाबूजी को अपना लेती ।

खैर, हेमंत के विचार अनंत थे, परन्तु, उसकी समस्या का कोई अंत नहीं था । वास्तव में समस्या सोच की है, खुले-विचारों की है जिसमें आज शायद बिना स्वार्थ के रिश्ते अपनाने में कष्ट होता है । आज कितने ही मामलों में, पत्नी की स्वार्थी प्रवृत्ति व पति के निजी रिश्तों के तिरस्कार ने, एक खूबसूरत रिश्ते को समझौते का रूप दे दिया है । जिसके कारण आज शादी के लड्डू का स्वाद कुछ कड़वा सा हो गया है जिसे निगलना भी मुश्किल है और उगलना भी ।

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापै नहीं लिपटे रहत भ्रुजंग ॥

यदि किसी मनुष्य की प्रकृति अच्छी है, तो कुसंग के कारण उसमें कोई विकार उत्पन्न नहीं हो सकता। भले ही चन्दन के वृक्ष में साँप लिपटे रहते हैं, तब भी उसमें विष व्याप्त नहीं होता ।

रहिमन असमय के परे, हित अनहित है जाय ।
बधिक बधै मृग बान सो, रुधिर देत बताय ॥

असमय के आने पर मित्र भी शत्रु हो जाते हैं। शिकारी हिरन को जब बाण मारता है, तो खून ही शिकारी को बता देता है कि किधर गया है। खून के निशानों के सहारे खोजता शिकारी हिरन को पकड़ लेता है।

- रहीम -

लघु कथा – सुनील कुमार गुप्ता



किसी जंगल में दो भूत बड़े आराम से रह रहे थे। एक भूत उम्र में छोटा था जबकि दूसरा भूत उससे उम्र में बड़ा और समझदार था। दोनों भूत एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। आपस में कभी भी झगड़ते नहीं थे। जो मिलता था मिल बांटकर खा लिया करते थे। इन्सानों के बारे में वो ज्यादा ज्ञान तो नहीं रखते थे पर इन्सानो से डरते बहुत थे। एक बार जंगल के जानकारों में हो रही चर्चा में उन्होंने सुन रखा था कि इन्सान बहुत खतरनाक होते हैं। इसलिए वो इन्सानों से बहुत डरते थे।

शहर की आबादी बढ़ने लगी तो जंगल की सीमाएं भी घटने लगी। एक दिन शहर की सीमाएं जंगल के बहुत नजदीक तक पहुंच गई। इंसानों के अतिक्रमण से दोनों भूत बहुत परेशान रहने लगे। वे दोनों नये आवास की तलाश में इधर-उधर भटके पर सभी जगह यही हाल था। इंसानों की बस्तियां जंगलों तक फैल चुकी थी। अब दोनों भूतों को इस बात का डर सताने लगा कि आने वाले समय में इन्सान उन्हें हानि पहुंचा सकते हैं। इसलिए इन्सानों से बचने के लिए उन्होंने अपने आवास को पहाड़ी के टीले पर स्थानांतरित कर लिया था।



एक दिन उन्हें इन्सानों की बस्ती से कुछ स्वादिष्ट व्यंजनों के तैयार होने की महक आई। छोटे भूत के मुंह में पानी आ गया। "कहीं स्वादिष्ट व्यंजन बन रहे हैं यहां तक महक आ रही है। लगता है कहीं कोई शादी ब्याह का समारोह चल रहा है।" उसने बड़े भूत से कहा, "आज देर गये आधी रात को जाकर देखते हैं। शायद कुछ बचा खुचा मिल जाये।" छोटे भूत की यह बात सुनकर बड़े भूत के मुँह में भी पानी आ गया। इसलिए वह छोटे भूत के आग्रह को टाल नहीं पाया। बड़ा भूत इंसानों की बस्ती में जाने के लिए राजी हो गया। दोनों भूत देर रात डरते-डरते इंसानों की बस्ती तक जा पहुंचे।

काफी बड़ा समारोह था। शायद शादी का समारोह था जो लगभग सम्पन्न हो चुका था। पर एक जगह शामियाने में अभी भी रोशनी थी। बड़े भूत को वहां कुछ इन्सानों के होने का आभास हुआ। शायद कुछ इंसान अभी भी वहां मौजूद थे और जल-पान कर रहे थे। दोनों भूत सहमें हुए थे। छोटा भूत हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। उसने बड़े भूत से आग्रह किया कि वो छुप कर देखें कि क्या चल रहा है। बड़े भूत ने हिम्मत जुटा कर शामियाने की बगल में से झांककर देखा। मदिरा-पान चल रहा था। इंसान शराब की चुस्कियों के साथ गोश्त उड़ा रहे थे। हड्डियां चूस रहे थे। बड़े भूत के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। उसका सारा भय काफूर हो गया। मुँह से निकला— वाह! बड़ा भूत वहीं खड़ा मुस्कराया और छोटे भूत से कहने लगा, "आजा आजा, डर मत— यह सब लोग तो अपनी ही बिरादरी के लगते हैं, हम तो खाम-खां इनसे यूं ही डर रहे थे।"



भारती – मुख्त्यार सिंह



शाम का समय था। गर्मी का सीजन होने के कारण दिन छिपने को नहीं आ रहा था। हां हवा बिल्कुल बंद थी। चारों तरफ सन्नाटा सा छाया हुआ था। ऐसे लग रहा था। जैसे यह शांत माहौल किसी भयानक तूफान के आने की ओर इशारा कर रहा हो। उधर एक पलैट का दरवाजा कभी बंद हो रहा था तो कभी अपने आप खुल रहा था। साथ की सोसाइटी में अपने पलैट की बालकोनी में बैठा नरेंद्र यह नजारा पता नहीं कितनी देर से देख रहा था। परंतु उसे कोई दिखायी न दिया। उसने उठकर देखने की बड़ी कोशिश की कि उसे कुछ पता चले कि आखिर वह दरवाजा अपने आप कैसे खुल और बंद हो रहा था। वास्तव में नरेंद्र का पलैट पहली मंजिल पर था और जिस पलैट के दरवाजे को वह देख रहा था। वह शायद सातवीं या आठवां मंजिल पर था। उसे किसी अनहोनी घटना के होने घटना के होने का आभास सा हो रहा था। परंतु वह उस सोसाइटी में जा भी तो नहीं सकता था। आखिर में थकहार कर यह सोचकर कि छोड़ उसने क्या लेना है शायद कोई बच्चा होगा जो दरवाजे को बार-बार खोल-बंद कर रहा होगा, वह अपने कमरे में अंदर चला गया।

अगले दिन मौसम बहुत खराब हो गया। सुबह सात बजे से लेकर सारा दिन अंधेरे तूफान का तो पूछो ही मत, चारों तरफ घना अंधरा छा गया था। बिजली तो सुबह ही चली गई थी। ऐसे लग रहा था जैसे कोई राक्षस हवा के साथ-साथ काले धुंएँ का जहर उगल रहा हो। पता ही न चला कि कब शाम के आठ और फिर रात के ग्यारह बज गये। नरेंद्र की बीमार पड़ी मां भारती सिरहाने की तरफ दीवार में बनी सैल्फ पर जल रही मोमबत्ती हवा का झोंका आने पर बिल्कुल बुझने की कगार पर पहुंच जाती लेकिन बुझ नहीं रही थी। पता नहीं कौन सी दैवी शक्ति थी जो उसे जीवित कर देती और वह तरोंताजा हो कर फिर भरे यौवन वाली रोशनी फिर बुझने के कगार पर पहुंच जाती। नरेंद्र बालकोनी की तरफ का दरवाजा बंद भी नहीं कर सकता था क्योंकि वही तो एक रास्ता था उसकी बीमार मां के लिए थोड़ी बहुत हवा आने



के लिए। बिजली न होने के कारण पंखे का तो सवाल ही नहीं था। ऐसा लग रहा था कि जैसे काली-पीली रात अंधेरी और तूफान कह रहे हों कि नरेन्द्र की बीमार मां को आज जिंदा रहने नहीं देना और नरेन्द्र कह रहा हो कुछ भी हो जाए उसने अपनी मां को मरने नहीं देना। वह तेज बुखार से तपती अपनी मां को इतने भयानक मौसम से बचाने की भरपूर कोशिश कर रहा था। उसकी मां का सिर तेज बुखार से तड़प रहा था।

मदहोशी की हालत में वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद पता नहीं क्या कुछ बुड़बुड़ाने लग जाती थी। उसे अच्छी तरह याद था कि किस तरह उसकी मां के दाएं-बाएं हाथ कहे जाने वाले सभी सहारे एक-एक के हालातों में उसे अपने साथ लेकर आया था। नरेंद्र की मां वास्तव में नरेंद्र की सगी मां नहीं थी। पड़ोसियों के अनुसार वह तो देश की आजादी के समय हुए दंगों में अपने मां बाप से बिछड़ा एक बच्चा था। हो सकता है कि उसके मां-बाप उन दंगों में बचते-बचाते पाकिस्तान की ओर चले गए हों। मार-काट तो दोनों तरफ हो रही थी। उस समय भाई-भाई का दुश्मन बन गया था। छोटे-छोटे बच्चों को कोई कैसे बचा सकता था जब सभी को अपनी-अपनी जान बचाने के लाले पड़े हों।

पैरों की तरफ देखते हुए नीचे बैठा नरेंद्र सोच रहा था कि मां भारती ने अकेले कैसे अपने चार-चार बच्चों को पाला होगा। जब कि उस का घर वाला तो लोगों के कहने के अनुसार छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर कम आयु में ही भगवान को प्यारा हो गया था। ऊपर से उस अनाथ नरेंद्र को भी पाला। उसे अच्छी तरह याद था कि जब पड़ोस के एक बुजुर्ग ने उसे ताना मारते हुए कहा था कि वह तो इस घर का बच्चा ही नहीं है। उसने तो भारती ने अपने बच्चों के साथ पता नहीं कितनी मुश्किलों से पाला था। उसका नाम नरेन्द्र भी मां भारती ने ही रखा था। कब तक वह भारती के बच्चों के हिस्से का खाता रहेगा। अब तो वह बड़ा हो गया है। क्यों नहीं वह कहीं दूर जा कर कोई काम धंधा कर लेता। नरेंद्र ने उस बुजुर्ग की बातों का कोई बुरा न माना। इस के उल्ट अपनी असलियत जान कर उसके दिल में अपनी मां के प्रति इज्जत और बढ़ गई थी। इसलिए वह एक दिन बिना किसी को बताए ट्रेन पकड़ कर ती सुखिया स्टेशन पर पहुंच गया था। वहां से काम ढूंढने के लिए पता नहीं कितने शहरों में घूमता रहा। उसने बहुत मेहनत की। यहां तक कि रोटी के लिए उसने सड़क किनारे बने ढाबों में बरतन भी साफ किए। आखिर एक दिन ढाबे पर आए एक ट्रक ड्राइवर ने उसकी जिंदगी संवार दी। काफी देर तक उसने उस ड्राइवर के साथ हैल्पर का काम किया। फिर ट्रक ड्राइवर भी रहा। मेहनत करके उसने एक पुराना ट्रक खरीद लिया। फिर एक-एक करके तीन नए ट्रकों का मालिक बन गया। नरेन्द्र की शादी तो न हो सकी लेकिन उसने अपने गांव के नजदीक छोटे से शहर में दो कमरों का एक फ्लैट जरूर खरीद लिया।



नींद में पड़ी अपनी मां को हालातों को याद करते हुए वह सोच रहा था कि कैसे मां ने बहुत ही उतार-चढ़ाव भरी, पर अणख वाली जिंदगी व्यतीत की। लेकिन जब उसके बच्चे उडारु हुए और उसके अपने आराम से खाने का समय आया तो कुनबे वालों से एक दिन छोटी-मोटी कहा सुनी हो जाने के कारण उसके बड़े बेटे को उसके सामने ही गोलियों से भून डाला। मां का तो मानो दायां हाथ ही काट

लिया गया था। यहां ही बस नहीं हुई। कुनबे वालों ने उसके छोटे तों बच्चों को नशे की ऐसी लत लगाई कि उन्होंने अपनी मां की सारी उम्र की कमाई पर पानी फेर दिया। तीनों एक-एक कर मौत के मुंह में चले गए। कुनबे वालों की बूढ़ी माता की जमीन पर आंख थी। वे माता को मरवा कर उसकी जमीन भी हथिया लेते अगर उस दिन नरेंद्र अचानक गांव न आया न होता। परंतु वह मां के पास भी तो नहीं ठहर सकता था। वैसे भी वह अपने आप को बेगाना ही मानता था। कुछ हद तक यह बात सच भी थी। लेकिन दिल से वह मां भारती को ही अपनी मां मानता था क्योंकि उसने अपनी सगी मां तो देखी ही नहीं थी। मां की जान को खतरा देख उस से रहा न गया। उसने मां को समझा-बुझा कर उसकी जमीन उसके कुनबे वालों को ही दिलवा दी। मां का दिल रखने के लिए उनसे मां को थोड़े-बहुत पैसे भी दिलवा दिये और मां को अपने साथ शहर ले आया था।

मां की उतार-चढ़ाव वाली जिंदगी को देखकर नरेंद्र को ऐसे महसूस हो रहा था कि उसकी मां की कहानी अपने देश भारत के हालातों के साथ हू-ब-हू मेल खा रही है। वह सोच रहा था कि अपने देश भारत को भी समय-समय पर पता नहीं कितने विदेशी लुटेरों ने लूटा। किसी समय इतने विशाल देश को तात्कालीन हालातों ने एक विशाल देश न रहने दिया। हालातों ने देश के कितने हिस्सों को अलग करके नए देशों को जन्म दिया। बेशक समय-समय पर बने हालातों के कारण देश के कुछ हिस्से अलग हो कर नए देश बन गये किंतु वे आज भी किसी न किसी वजह से उसके देश भारत की तरफ ही देखते हैं।

सारी रात नरेंद्र को नींद न आई परंतु अब दिन जरूर निकल आया था। उधर मां ने भी होश आ चुका था। उसका बुखार अब उतर चुका था। नरेंद्र ने भगवान का शुक्रिया अदा किया कि उसकी मां बुखार उतरने के बाद बिल्कुल ठीक हो गई थी। उसने मां के पैरों पर अपना माथा रखते हुए रोनी सी आवाज में कहा, “मां, तूने तो रात को डरा ही दिया था। ऐसे लग रहा था कि आज तो तू मुझे इस दुनिया में अकेला छोड़कर भगवान के पास चली जाएगी”। उसकी मां कहने लगी, “बेटा जब तक तेरे जैसे पुत्र जिंदा हैं, दुनियां के भयानक से भयानक हालात तो क्या, शायद भगवान भी तेरी मां भारती का कुछ नहीं बिगाड़ सकता”।

जैसे सूर्योदय के होते ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शांत हो जाती हैं।

- अमृतलाल नागर

कार्यालय-समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां

1. श्री अर्पित सिंह, लिपिक ने दिनांक 29 दिसंबर 2018 से 10 जनवरी 2019 तक रणजी ट्राफी मैचों में भाग लिया।
2. श्री विजय आहुजा, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 24.02.2019 तक चंडीगढ़ में ऑल इंडिया सिविल सर्विस वॉलीबाल टूर्नामेंट में रैंफरी के स्तर पर भाग लिया।
3. महालेखाकार कार्यालय पंजाब की संयुक्त टीम ने दिनांक 04.02.2019 से 05.02.2019 तक पूरा दिन क्रिकेट अभ्यास मैच खेला तथा दिनांक 07.02.2019 से 09.02.2019 तक चंडीगढ़ में आई ए एण्ड जी उत्तर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लिया तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
4. श्री रनदीप सिंह, वरिष्ठ लेखाकार, फुटबाल खिलाड़ी ने दिनांक 11.02.2019 से 16.02.2019 तक कटड़ा (जम्मू व कश्मीर) में चण्डीगढ़ सीनियर स्टेट फुटबाल टीम के लिए रणजी ट्राफी 2019 में भाग लिया।
5. श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक ने दिनांक 13.02.2019 से 16.02.2019 तक गोरखपुर में सी.ए.जी. के क्रिकेट टीम में कोचिंग कैंप तथा दिनांक 17.02.2019 तक लक्ष्य चैंपियन ट्रोफी में भाग लिया।
6. श्री कशिश, लिपिक बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 14.02.2019 से 20.02.2019 तक पूना, महाराष्ट्र में ऑल इंडिया सिविल सर्विस बैडमिंटन टूर्नामेंट 2018-2019 में भाग लिया।
7. श्री राकेश कुमार, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 11.03.2019 से 15.03.2019 तक नई दिल्ली में ऑल इंडिया सिविल सर्विस बैडमिंटन टूर्नामेंट 2018-2019 में भाग लिया।
8. श्री गौरव देशवाल, लिपिक ने दिनांक 14 से 17 मार्च 2019 तक पटना बिहार में ऑल इंडिया डबल रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट -2019 में तथा दिनांक 26 से 31 मार्च 2019 तक नई दिल्ली में योनेक्स सनराइज इंडिया ओपन टूर्नामेंट 2019 में भाग लिया।
9. महालेखाकार, पंजाब कार्यालय की संयुक्त क्रिकेट टीम ने दिनांक 25.03.2019 से 27.03.2019 तक तेलंगाना (हैदराबाद) में भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लिया।
10. श्री कशिश, लिपिक ने दिनांक 26 से 31 मार्च, 2019 तक नई दिल्ली में योनेक्स सनराइज इंडिया ओपन टूर्नामेंट 2019 में भाग लिया।
11. 26 जनवरी 2019 को कार्यालय में गणतंत्र दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया गया।
12. नराकास चण्डीगढ़ द्वारा दिनांक 20.08.2018 को आयोजित होने वाली 'स्वयं रचित कविता प्रतियोगिता' में कार्यालय के श्री सुनील कुमार गुप्ता, व.ले. व महेन्द्र सिंह, क. हि.अ. ने भाग लिया।
13. नराकास चण्डीगढ़ द्वारा दिनांक 21.08.2019 को आयोजित होने वाली 'देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता' में कार्यालय के श्री अजमेर सिंह, डी.ई.ओ. ने भाग लिया तथा प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।
14. नराकास चण्डीगढ़ की ओर से वर्ष 2017-18 के लिए आयोजित की जाने वाली 'पत्रिका प्रतियोगिता' (बड़े स्तर की) में 'अंकुर' पत्रिका को तृतीय स्थान हेतु चुना गया।

नियुक्तियां

प्रशासन-1 के अनुसार 01-10-2018 से 31-03-2019

क्रम संख्या	नाम (सर्व श्री / श्रीमती)	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1.	ओमवीर अंतिल	लेखाकार	15.10.2018
2.	श्री गुरप्रताप सिंह	व.ले.	13.11.2018
3.	दलाल सरकार	एम.टी.एस.	26.11.2018
4.	रंजना सिंह	एम.टी.एस.	26.11.2018
5.	संजय कुमार मीणा	एम.टी.एस.	08.01.2019
6.	एकता	व.हि.अ.	06.03.2019

पदोन्नतियां

वरिष्ठ लेखा अधिकारी से कल्याण अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री / श्रीमती)	दिनांक
1.	जसविंदर शर्मा	10.12.2018

लेखा अधिकारी से वरिष्ठ लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री / श्रीमती)	दिनांक
1.	तरसेम सिंह	01.01.2019
2.	कुसुमजीत कौर	01.01.2019
3.	श्रवण लाल कटोच	01.01.2019
4.	गुरमीत सिंह ग्रेवाल	01.01.2019

सहायक लेखा अधिकारी से लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री / श्रीमती)	दिनांक
1.	सुनील कुमार कक्कड़	01.01.2019
2.	निशि शर्मा	01.01.2019
3.	सुरजीत सिंह-2	01.01.2019
4.	सीमा गुप्ता	01.03.2019
5.	गुरप्रताप सिंह	01.03.2019

वरिष्ठ लेखाकारों, मंडलीय लेखाकारों, डी.ई.ओ. व तदर्थ पदों से सहायक लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री / श्रीमती)	दिनांक
1.	अनुराग कुमार	01.01.2019
2.	मनीषा	01.01.2019
3.	अनिल	01.01.2019
4.	चंदन कुमार	01.01.2019
5.	सचिन अरोड़ा	01.01.2019

एकता का किला सब से सुदृढ़ होता है
उसके भीतर रहकर कोई
भी प्राणी असुरक्षा अनुभव नहीं करता।

लेखाकार से वरिष्ठ लेखाकार के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री/श्रीमती)	दिनांक
1.	सुमित कुमार नायक	01.01.2019
2.	बलकार सिंह	01.01.2019
3.	दिनेश	01.01.2019
4.	राकेश जना	01.01.2019
5.	कुलदीप कुमार	01.01.2019
6.	विश्वदीप त्यागी	01.01.2019
7.	वरिन्द्र सिंह सैनी	01.01.2019
8.	रितु वर्मा	01.01.2019
9.	धर्मेन्द्र कुमार	01.01.2019
10.	विवेक कुमार	01.01.2019
11.	उदयभान सिंह	01.01.2019
12.	निशांत मनचंदा	01.01.2019

डी.ई.ओ. ग्रेड-ए से डी.ई.ओ. ग्रेड-बी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री/श्रीमती)	दिनांक
1.	भीम सिंह	01.01.2019

लिपिक से लेखाकार के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री / श्रीमती)	दिनांक
1.	ताशीदीप कौर	01.01.2019
2.	रविन्द्र सिंह रावत	01.01.2019
3.	रविकांत शर्मा	01.01.2019
4.	हरदीप कुमार	01.01.2019

एम.टी.एस. से लिपिक के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम (श्री / श्रीमती)	दिनांक
1.	केसर सिंह	01.10.2019

अंग्रेजी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है।
सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का
माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।

- राज गोपालाचारी

जब तक भारत का राजकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा
तब तक हम यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज है

- मोरारजी देसाई

सेवानिवृत्तियां

क्रम संख्या	नाम (श्री / श्रीमती)	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	सरोज बाला, व.ले.अ.	31.10.2018
2.	शशि अग्रवाल, स.ले.अ.	30.11.2018
3.	सुदेश कुमारी, व.ले.	30.11.2018
4.	राम कुमार, व.ले.	30.11.2018
5.	जसविंदर शर्मा, कल्याण अधिकारी	31.12.2018
6.	अनिल कुमार भारद्वाज, व.ले.अ.	31.12.2018
7.	संतोख सिंह, व.ले.	31.12.2018
8.	बिशन सिंह भट्टी, व.ले.	31.01.2019
9.	चन्द्र मोहन, व.ले.	31.01.2019
10.	प्रीतम सिंह, व.ले.अ.	28.02.2019
11.	भगत सिंह, व.ले.अ.	28.02.2019
12.	कुलवंत सिंह, व.ले.	28.02.2019
13.	वरिन्द्र पुरी, व.ले.	31.03.2019
14.	विनोद कुमार शर्मा, व.ले.	31.03.2019
15.	बलबीर चंद, व.ले.	31.03.2019

सभी सेवा निवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी, स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए 'अंकुर' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

अलविदा

श्री कृष्ण लाल जी, वरिष्ठ लेखाकार दिनांक 31-10-2018 को व श्री मान सिंह गिल जी, पर्यवेक्षक दिनांक 30-01-2019 को अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर उस अखंड ज्योति में समा गये। अंकुर परिवार की ओर से इन दिवंगत आत्माओं के प्रति भाव-भीनी श्रद्धांजलि।

वर्ष 2019-20 हेतु, कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग संबंधी मुख्य लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	“क” क्षेत्र	“ख” क्षेत्र	“ग” क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

कार्यालयीन गतिविधियाँ



गणतंत्र दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए
श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।



गणतंत्र दिवस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम का आनंद उठाते
कार्यालय परिवार के सदस्यगण।

ध्वजारोहण





रॉक गार्डन, चण्डीगढ़



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ -160017



<http://www.agpunjab.gov.in/hindi.html>



Printed at : Azad Offset Printers, 144, Press Site, Ind. Area-1, Chandigarh
9814011543, 9814111543, 9914111543